लखनऊ

गुरुवार 26 जून 2025

वर्ष : 10 । अंक: 339

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

UPHIN/2014/57034

मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है, क्योंकि वह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है। - चर्चिल

TODAY WEATHER

DAY 37° Hi

NIGHT 26° Low

संक्षेप

उत्तराखंड के हल्द्वानी में कार नहर में गिरने से नवजात समेत 4 लोगों की मौत, 3 घायल

हल्द्वानी। उत्तराखंड के नैनीताल जिले के हल्द्वानी में बुधवार को भारी बारिश के बीच 7 लोगों से भरी एक कार सड़क से उतरकर उफनती नहर में गिर गई, जिससे 4 दिन के नवजाता शिशु सहित 4 लोगों की मौत हो गई। इसी तरह कार सवार 3 अन्य घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने कार को नहर से निकाला और घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। मृतकों के परिजनों के आने के बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस के अनुसार, किच्छा के बरा निवासी महिला को 4 दिन पहले प्रसव पीड़ा होने पर अस्पताल लाया गया था, जहां उसने बेटे को जन्म दिया था। बुधवार को छुट् ?टी मिलने पर परिवार दोनों को कार से वन विभाग के बगल में रही नहर के रास्ते किच्छा जा रहा था। भारी बारिश के बीच मोड़ पर चालक के नियंत्रण खो देने से कार नजर में जा गिरी। इस हादसे में नवजात, उसके पिता, नानी और ताऊ की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि हादसे की सूचना पर दमकल टीम ने रेस्क्यू अभियान चलाकर कार और उसमें सवार लोगों को बाहर निकाला और घायल हुए चालक, नवजात की मां समेत 3 को अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने बताया कि मृतकों के परिजनों को सूचना कर दी है। उनके आने के बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई की जाएगी। इस हादसे में एक ही परिवार के 4 लोगों की मौत होने से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। इससे पहले सोमवार को यमुनोत्री मंदिर के लिए पैदल मार्ग पर 9 कैंची भैरव मंदिर के पास हुए भूस्खलन की चपेट में आने से 2 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई थी। अधिकारियों ने बताया कि दोनों के क्षत-विक्षत शवों को मलबे से बाहर निकाल लिया गया। इसी तरह महाराष्ट्र के एक तीर्थयात्री को पहले ही घायल अवस्था में बचा लिया गया था और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। भूस्खलन पैदल मार्ग से लगभग 20 मीटर ऊपर हुआ था।

महाराष्ट्र में हिंदी पहली से नहीं बल्कि पांचवीं कक्षा से पढ़ाई जानी चाहिए : अजित पवार

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने राज्य के विद्यालयों में पहली कक्षा से तीसरी के रूप में हिंदी को शामिल किए जाने के कदम का विरोध किया और कहा कि इसे पांचवीं कक्षा से पढ़ाया जाना चाहिए। मंगलवार को मुंबई में पत्रकारों से बात करते हुए पवार ने यह भी कहा कि छात्रों को पहली कक्षा से ही मराठी सीखनी चाहिए ताकि वे इसे अच्छी तरह से पढ़ और लिख सकें। राज्य सरकार ने पिछले सप्ताह एक संशोधित आदेश जारी किया था जिसमें कहा गया था कि मराठी और अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पहली से पांचवी कक्षा तक के विद्यार्थियों को हिंदी सामान्यत: तीसरी के रूप में पढ़ाई जाएगी, जिसके बाद इस पर विवाद पैदा हो गया। सरकार ने कहा कि हिंदी अनिवार्य नहीं होगी तथापि उसने हिंदी के अलावा किसी अन्य का अध्ययन करने के लिए स्कूल में प्रत्येक कक्षा में कम से कम 20 छात्रों की सहमति अनिवार्य कर दी। पवार ने कहा, ''मुख्यमंत्री ने सोमवार को इस मुद्दे पर एक बैठक बुलाई। मेरा मानना है कि हिंदी को पहली कक्षा से चौथी कक्षा तक शुरू नहीं किया जाना चाहिए। इसे पांचवीं कक्षा से शुरू किया जाना चाहिए।

यह मेरी नहीं, भारत की अंतरिक्ष यात्रा की शुरुआत है

एक्सिओम-4 मिशन लॉन्च के बाद शुभांशु शुक्ला का देश के लिए पहला संदेश

नई दिल्ली, एजेंसी। शुभांशु शुक्ला एक्सिओम-4 मिशन के तहत 3 अन्य अंतरिक्ष यात्रियों के साथ अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आईएसएस) के लिए रवाना हो गए हैं। यह मिशन आज दोपहर 12:01 बजे अमेरिका के कैनेडी स्पेस सेंटर से स्पेस-एक्स के फाल्कन-9 रॉकेट की मदद से लॉन्च किया गया। सफलतापूर्वक मिशन लॉन्च होने के बाद शुक्ला ने अंतरिक्ष यान से भारत के लिए हिंदी में बोलते हुए अपना पहला संदेश भेजा, जिसने पूरे देश को गर्व और खुशी से भर दिया है।

अंतरिक्ष से भारत के लिए अपने पहले संदेश में शुक्ला ने कहा, नमस्कार, मेरे प्यारे देशवासियों, यह शानदार यात्रा थी... 41 साल बाद हम फिर से अंतरिक्ष में हैं। इस समय हम 7.5 किलोमीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे हैं। मेरे कंधे पर तिरंगा है, जो बता रहा है कि मैं अकेला नहीं हूं, बल्कि आप सब मेरे साथ हैं। उनका यह संदेश पूरे देश में गर्व और भावुकता से भरा हुआ पल बन गया। उन्होंने आगे कहा, यह मेरी अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन तक की यात्रा की शुरुआत नहीं है, बल्कि भारत के मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत है। मैं चाहता हूं कि हर भारतीय इसका हिस्सा बने। आप सबका सीना भी गर्व से चौड़ा होना चाहिए और आप भी उतनी ही खुशी और जोश के साथ इस यात्रा का स्वागत करें। आइए हम सब मिलकर भारत की मानव अंतरिक्ष यात्रा की शुरुआत करें। जय हिंद, जय भारत। एक्सिओम-4 मिशन नासा, स्पेस-एक्स और एक्सिओम स्पेस का मिलाजुला निजी मिशन है, जो आईएसएस के लिए रवाना हुआ है। इस मिशन में अमेरिका, पोलैंड, हंगरी और भारत से अंतरिक्ष यात्री शामिल हैं। शुक्ला को इस मिशन में पायलट की भूमिका दी गई है। यह मिशन भारत के गगनयान जैसे भविष्य के मानव अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए अनुभव जुटाने का सुनहरा मौका है और भारत के अंतरिक्ष सफर में एक बड़ी उपलब्धि भी।

140 करोड़ भारतीयों की उम्मीदें-आकांक्षाएं लेकर गए: मोदी

पीएम मोदी ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए एक्सिओम-4 मिशन के सफल प्रक्षेपण का स्वागत किया और कहा कि इस मिशन में भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला अपने साथ 140 करोड़ भारतीयों की शुभेच्छाएं, उम्मीदें और आकांक्षाएं लेकर गए हैं। मोदी ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि हम भारत, हंगरी, पोलैंड और अमेरिका के अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर रवाना हुए अंतरिक्ष मिशन के सफल प्रक्षेपण का स्वागत करते हैं। उन्होंने कहा कि ग्रुप कैप्टन शुक्ला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर जाने वाले पहले भारतीय बनने की राह पर हैं।

शुभांशु शुक्ला के साथ एक्सिओम-4 मिशन लॉन्च, पहली बार कोई भारतीय आईएसएस पहुंचेगा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला को अंतरिक्ष ले जाने वाला एक्सिओम-4 मिशन कई बार टलने के बाद आज (25 जून) आखिरकार सफलतापूर्वक लॉन्च हो गया है। इस मिशन को स्पेस-एक्स के फाल्कन-9 रॉकेट से आज दोपहर 12:01 बजे फ्लोरिडा से लॉन्च किया गया। यह यान 26 जून की शाम लगभग 04:30 बजे अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आईएसएस) से जुड़ जाएगा। इस मिशन के जरिए 41 साल बाद भारत का कोई नागरिक अंतरिक्ष में गया है। एक्सिओम-4 मिशन अमेरिका की निजी कंपनी एक्सिओम स्पेस द्वारा संचालित एक व्यावसायिक मिशन है। इसमें नासा और स्पेस-एक्स का भी सहयोग है। इस मिशन में 4 (भारत, अमेरिका, पोलैंड और हंगरी) से अंतरिक्ष यात्री शामिल हैं। इसका उद्देश्य 14 दिन तक स्पेस स्टेशन पर रहकर विभिन्न वैज्ञानिक, तकनीकी और जैविक प्रयोग करना है। यह मिशन अंतरिक्ष में इंसानों की मौजूदगी और विज्ञान के भविष्य को लेकर कई अहम जानकारियां देगा। यह मिशन भारत के लिए ऐतिहासिक है, क्योंकि पहली बार कोई भारतीय आईएसएस तक जाएगा।

उत्तराखंड पहुंचे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, राज्यपाल गुरमीत सिंह ने किया स्वागत

हल्द्वानी। देश के उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अपने तीन दिवसीय उत्तराखंड भ्रमण पर नैनीताल जिले के हल्द्वानी पहुंचे। हल्द्वानी आर्मी हेलीपैड पर उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने उनका स्वागत और अभिनंदन किया। राज्यपाल गुरमीत सिंह के साथ बतौर मुख्यमंत्री उत्तराखंड के प्रतिनिधि कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या, सांसद अजय भट्ट, मेयर हल्द्वानी गजराज बिष्ट में भी उनका स्वागत किया। बुधवार को हल्द्वानी आर्मी हेलीपैड पहुंचे पहुंचे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का राज्यपाल ने फूलों का गुलदस्ता देकर स्वागत किया। इसके बाद उपराष्ट्रपति ने मौजूद सेना के जवानों से मुलाकात की। इसके बाद उपराष्ट्रपति भारी सुरक्षा के बीच बॉय रोड नैनीताल राजभवन पहुंचे। वहीं अपने तीन दिवसीय उत्तराखंड दौरे के दौरान उपराष्ट्रपति आज 25 जून को कुमाऊं विश्वविद्यालय के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम के अलावा अन्य समारोह में भी प्रतिभा करेंगे। साथ ही कुमाऊं विश्वविद्यालय की फैकल्टी के साथ संवाद भी करेंगे। जबकि उपराष्ट्रपति का 27 जून को नैनीताल के शेरवुड कॉलेज में विद्यार्थियों को संबोधित कार्यक्रम भी है। ऐसे में हल्द्वानी और नैनीताल शहर में पुलिस सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है।

आईजी नीलेश आनंद भरणे के मुताबिक, उपराष्ट्रपति की सुरक्षा के लिए 400 से अधिक पुलिसकर्मी, तीन कंपनी पीएसी, एक कंपनी पैरामिलिट्री फोर्स, इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी), एटीएस और ड्रोन सर्विलांस समेत सभी जरूरी इंतजाम किए गए हैं।

जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पास संदिग्ध गतिविधि, सेना ने की गोलीबारी

जम्मू। जम्म-कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास सुरक्षा बलों की मुस्तैदी से एक बार फिर बड़ा खतरा टल गया। सेना के जवानों ने एलओसी के पास अग्रिम इलाके में संदिग्ध गतिविधि देखने के बाद गोलीबारी की। जबकि सुरक्षा बलों ने मंगलवार को जम्मू-कश्मीर के पुंछ, सांबा और कठुआ जिलों में एक दर्जन से अधिक स्थानों पर तलाशी ली। रिपोर्ट के अनुसार राजौरी के अग्रिम इलाके में मुस्तैद सुरक्षा बलों ने सुबह के समय घने पेड़ों की आड़ में संदिग्ध गतिविधि देखी। इसमें तीन से चार लोगों के शामिल होने का संदेह था। जवानों ने दो दर्जन से अधिक राउंड फायरिंग की और साथ ही तलाशी अभियान भी चलाया। इस दौरान ड्रोन भी तैनात किए।

'लोगों को जेल में डाला, संविधान को कुचला गया', इमरजेंसी के 50 साल पूरे होने पर बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। आपातकाल को 50 साल पूरे हो गए हैं। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उस दौर को याद करते हुए एक्स पर पोस्ट लिखा, 'आज भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के सबसे काले अध्यायों में से एक, आपातकाल लागू होने के पचास साल पूरे हो गए हैं। भारत के लोग इस दिन को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन, भारतीय संविधान में निहित मूल्यों को दरकिनार कर दिया गया।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'हम आपातकाल के खिलाफ लड़ाई में डटे रहने वाले हर व्यक्ति को सलाम करते हैं! ये पूरे भारत से, हर क्षेत्र से, अलग-अलग विचारधाराओं से आए

लोग थे जिन्होंने एक ही उद्देश्य से एक-दूसरे के साथ मिलकर काम किया। भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की रक्षा करना और उन आदर्शों को बनाए रखना जिनके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह उनका सामूहिक संघर्ष था जिसने यह सुनिश्चित किया कि तत्कालीन कांग्रेस सरकार को लोकतंत्र बहाल करना पड़ा और नए चुनाव कराने पड़े, जिसमें वे बुरी तरह हार गए।'

पीएम मोदी ने कहा, 'हम अपने संविधान के सिद्धांतों को मजबूत करने और विकसित भारत के अपने सपने को साकार करने के लिए मिलकर काम करने की अपनी प्रतिबद्धता को भी दोहराते हैं। हम प्रगति की नई ऊंचाइयों को छुएं और गरीबों और वंचितों के सपनों को पूरा करें।' जब आपातकाल लगाया गया था, तब मैं आरएसएस का युवा प्रचारक था। आपातकाल विरोधी आंदोलन मेरे लिए सीखने का एक अनुभव था। इसने हमारे लोकतांत्रिक ढांचे को बचाए रखने की अहमियत को फिर से पुष्ट किया। साथ ही, मुझे राजनीतिक स्पेक्ट्रम के सभी लोगों से बहुत कुछ सीखने को मिला। मुझे खुशी है कि ब्लूक्राफ्ट डिजिटल फाउंडेशन ने उन अनुभवों में से कुछ को एक किताब के रूप में संकलित

> मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया, प्रेस की स्वतंत्रता को खत्म कर दिया गया और कई राजनीतिक नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, छात्रों और आम नागरिकों को जेल में डाल दिया गया। ऐसा लग रहा था जैसे उस समय सत्ता में बैठी कांग्रेस सरकार ने लोकतंत्र को बंधक बना लिया था।
> **नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

25 जून को प्रतिवर्ष संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में आपातकाल की घोषणा के 50 वर्ष पूरे होने के गंभीर अवसर पर, डॉ। श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन ने नई दिल्ली में एक स्मृति कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के सबसे अंधकारमय अध्याय पर विचार किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य भाषण केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा दिया गया। आपातकाल को लोकतंत्र की आत्मा पर एक क्रूरतम प्रहार बताते हुए, शाह ने प्रस्ताव रखा कि 25 जून को प्रतिवर्ष संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए। एक ऐसा दिन जब संविधान के हनन और सत्तावाद के विरुद्ध डटे लाखों भारतीयों के साहस को याद किया जाए।

अमित शाह ने कहा कि लोकतांत्रिक मूल्य भारतीय संस्कृति में गहराई से समाहित हैं। उन्होंने स्मरण किया कि कैसे उपनिवेश काल में भी भारतवासी, चाहे किसी भी क्षेत्र या

पृष्ठभूमि से हों, प्रतिनिधिक शासन की आकांक्षा रखते थे, और वही मूल्य आज भी राष्ट्र की आकांक्षाओं को दिशा दे रहे हैं। भारत को लोकतंत्रों की जननी बताते हुए, उन्होंने वैशाली और मल्लों जैसे प्राचीन गणराज्यों का उदाहरण दिया और बताया कि हमारे लोकतांत्रिक परंपराएं कितनी गहराई तक जमी हुई हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी तानाशाह, चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, भारतीय लोकतंत्र की नींव को उखाड़ नहीं सकता।

केंद्रीय गृह मंत्री ने आपातकाल की सामूहिक पीड़ा को याद करते हुए कहा कि समाज के हर वर्ग छात्रों से लेकर सरकारी कर्मचारियों तक, पत्रकारों से लेकर गृहिणियों तक ने इसका दंश झेला। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए बताया कि उनके गांव से 184 लोगों को मनमाने ढंग से गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया था।

शाह ने छात्र आंदोलनों और लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाले जेपी आंदोलन की भूमिका की सराहना की, जिसने देश की चेतना को जगाया। उन्होंने आपातकाल के दौरान राज्य तंत्र के दुरुपयोग की तीखी आलोचना की, जब केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल असहमति को दबाने, विपक्ष को डराने और नागरिक स्वतंत्रताओं को कुचलने के लिए किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि उस समय की कांग्रेस सरकार ने न्यायपालिका और मीडिया जैसी स्वतंत्र संस्थाओं को भी कमजोर किया, जो लोकतंत्र के खिलाफ किसी भी खतरे की रक्षा करने वाली ढाल होनी चाहिए थीं। शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लिखित उस पुस्तक की सराहना की, जो आपातकाल की भयावहता और उन सामान्य नागरिकों के त्याग को दर्ज करती है जिन्होंने स्वतंत्रता की रक्षा में अडिग रहकर संघर्ष किया। उन्होंने इस पुस्तक को भारतीय जनता की साहस और संकल्प को समर्पित बताया। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की अक्षुण्ण शक्ति को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि सरकारें आती-जाती रहेंगी, लेकिन संविधान की आत्मा हर नागरिक में जीवित रहनी चाहिए। उन्होंने युवाओं से संविधानिक मूल्यों को आत्मसात करने और उन्हें निभाने की अपील के साथ अपने उद्बोधन का समापन किया।

यह कार्यक्रम केवल अतीत के अन्यायों को याद करने का मंच नहीं था, बल्कि यह लोकतांत्रिक संस्थाओं की रक्षा के संकल्प को दोहराने और यह सुनिश्चित करने का अवसर भी था कि भारत के इतिहास में फिर कभी ऐसा अध्याय न दोहराया जाए।

मेघालय हनीमून मामला : सोनम और राज कुशवाह ने प्रेम संबंध होने की बात स्वीकारी

शिलांग। मध्य प्रदेश के इंदौर निवासी राजा रघुवंशी की मेघालय में हनीमून के दौरान हत्या होने के मामले में आरोपी उनकी पत्नी सोनम और उसके कथित प्रेमी राज कुशवाह ने पुलिस पूछताछ में प्रेम संबंध की बात स्वीकार कर ली है। दोनों ने राजा की हत्या में अपनी भूमिका भी स्वीकार कर ली है। मेघायल पुलिस ने बुधवार को यह खुलासा किया है। पुलिस अब मामले में दोनों के वित्तिय लाभ होने की भूमिका की भी जांच कर रही है।

रिपोर्ट के अनुसार, मेघालय पूर्वी खासी हिल्स के पुलिस अधीक्षक (एसपी) विवेक सायम बताया कि सोनम और राज दोनों ने अपने प्रेम संबंध और राजा की हत्या का अपराध स्वीकार कर लिया है। उन्होंने बताया कि राज के साथ उसके रिश्ते से नाखुश सोनम के परिवार ने उसकी शादी राजा से तय की थी। इससे नाराज सोनम ने परिवार को धमकी दी थी कि अगर उन्होंने उसकी शादी राजा से करवाई तो उसे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

एसपी सायम ने बताया कि सोनम और राज का प्रेम-प्रसंग अभी भी हत्या के पीछे मुख्य कारण है, लेकिन पुलिस वित्तीय लाभ जैसे अन्य उद्देश्यों की भी जांच की जा रही है। हालांकि वे अभी तक पुख्ता तौर पर स्थापित नहीं हुए हैं। उन्होंने कहा कि सोनम और राज अपने प्रेम संबंध के चलते ही राजा को बीच से हटाना चाहते थे। सोनम ने मजबूरी में शादी की थी इसलिए राजा की हत्या ही एकमात्र रास्ता था।

सायम ने बताया कि राजा रघुवंशी के परिवार ने सोनम रघुवंशी का नार्को टेस्ट कराने की मांग की थी, लेकिन आरोपियों के खिलाफ हत्या में उनकी भूमिका के पर्याप्त सबूत मौजूद होने के कारण मांग को अस्वीकार कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि मामले में सोनम और राज के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। ऐसे में नार्को टेस्ट की आवश्यक ही नहीं है। यह टेस्ट आमतौर पर सबूतों की कमी के कारण अपराध सिद्ध करने के लिए किया जाता है।

आगरा में बनेगा इंटरनेशनल पोटैटो सेंटर, पुणे में होगा मेट्रो का विस्तार, कैबिनेट की बैठक में लिए गए ये बड़े फैसले

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली केंद्रीय कैबिनेट ने बुधवार को आपातकाल की घोषणा की 50वीं वर्षगांठ मनाने का संकल्प लिया। कैबिनेट ने उन अनगिनत नागरिकों को श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने आपातकाल के दमनकारी शासन और भारतीय संविधान के सार को दबाने के उसके प्रयास के खिलाफ बहादुरी से खड़े हुए। यह स्वीकार करते हुए कि लोकतांत्रिक सिद्धांतों का क्षरण 1974 में ही नवनिर्माण आंदोलन और संपूर्ण क्रांति अभियान पर कार्रवाई के साथ शुरू हो गया था, कैबिनेट ने बुधवार को अपनी बैठक के दौरान दो मिनट का मौन भी रखा।

इस ऐतिहासिक मील के पत्थर को याद करने के अलावा, कैबिनेट

ने कई प्रभावशाली विकास पहलों को भी मंजूरी दी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सत्र के दौरान लिए गए तीन महत्वपूर्ण निर्णयों की घोषणा की।

पुणे मेट्रो विस्तार: पुणे में मेट्रो नेटवर्क को बढ़ावा देने के लिए 3,626 करोड़ रुपये के आवंटन को मंजूरी दी गई है, जिससे शहरी गतिशीलता और बुनियादी ढांचे के विकास में वृद्धि होगी।

संशोधित झरिया मास्टर प्लान: झारखंड के झरिया में भूमिगत कोयला आग की लंबे समय से चली आ रही समस्या को संबोधित करते हुए, प्रभावित समुदायों को राहत पहुंचाने और पर्यावरण संतुलन को बहाल करने के लिए 5,940 करोड़ रुपये की संशोधित योजना को मंजूरी दी गई।

आगरा में अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र: कृषि के क्षेत्र में एक अनूठा कदम उठाते हुए, मंत्रिमंडल ने आगरा में अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र की स्थापना के लिए 111 करोड़ रुपये को मंजूरी दी। इस कदम से देश भर में आलू की खेती में नवाचार और उत्पादकता को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

संविधान हत्या दिवस के 50 वर्ष

वैष्णव ने कहा कि वर्ष 2025 संविधान हत्या दिवस के 50 वर्ष पूरे होंगे - भारत के इतिहास का एक अविस्मरणीय अध्याय जहां संविधान को नष्ट कर दिया गया, भारत के गणतंत्र और लोकतांत्रिक भावना पर हमला किया गया, संघवाद को कमजोर किया गया और मौलिक अधिकारों, मानव स्वतंत्रता और गरिमा को निलंबित कर दिया गया।

11 राज्यों में मूसलाधार बारिश की चेतावनी, दिल्ली में जल्द दस्तक देगा मानसून

नई दिल्ली, एजेंसी। मानसून की दस्तक के साथ उत्तर भारत में मौसम का मिजाज बदल गया है। बुधवार (25 जून) को सुबह से ही कई इलाकों में बादल छाए हुए हैं, जिससे लोगों को गर्मी-उमस से राहत मिली है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के अनुसार, 30 जून तक पश्चिमी, मध्य, पूर्वी और दक्षिणी हिस्सों के 11 राज्यों में भारी बारिश होने का पूर्वानुमान जताया है। इसके साथ ही दिल्ली में भी कुछ घंटों में मानसून का प्रवेश करने की संभावना बनी हुई है।

मानसून इस बार जल्दी 24 मई को केरल में दस्तक दे चुका था। इसके बाद लगभग 12 दिनों तक थमने के बाद फिर से सक्रिय हो गया है। अब यह दक्षिण भारत से आगे बढ़ते हुए उत्तर-पश्चिमी इलाकों में

तेज हो रहा है और 25 जून को कोंकण, गोवा, मध्य महाराष्ट्र और गुजरात के कुछ हिस्सों में पहुंचेगा। आईएमडी के मुताबिक, मानसून उत्तरी अरब सागर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और पंजाब में आगे बढ़ गया है। भारी बारिश के चलते कई राज्यों में हालात असामान्य हो गए हैं। गुजरात में मंगलवार (24 जून) को हुई झमाझम बारिश के कारण सूरत, वापी समेत कई शहरों में जलभराव की समस्या हो गई। महाराष्ट्र के नासिक में कई हिस्से गोदावरी नदी के उफान पर होने के कारण जलमग्न हो गए। केरल के तटीय इलाकों में हो रही मूसलाधार बारिश के कारण जनजीवन प्रभावित हो रहा है। इसके अलावा अन्य राज्यों में भी बारिश आफत बनकर बरस रही है। उत्तर प्रदेश में पूर्व से पश्चिम तक बारिश ने जोर पकड़ लिया है। 25 जून को तराई, बुंदेलखंड, सहारनपुर, बिजनौर, मुरदाबाद और रामपुर में भारी बारिश के साथ बिजली गिरने की संभावना है। दूसरी तरफ बिहार के कई जिलों में तेज हवाओं के साथ बारिश होने की संभावना जताई गई है। राजस्थान में भी नागौर, सीकर, जयपुर, अजमेर, कोटा, बारां, भीलवाड़ा, बूंदी, झलावाड़ा, टोंक, झुंझुनू और चुरू में तेज बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है।

SOG प्रभारी सहित पूरी टीम लाइन हाजिर... आखिर SP अभिषेक यादव ने क्यों की इतनी बड़ी कार्रवाई?

आर्यावर्त संवाददाता

पीलीभीत। घर में घुसकर महिला से छेड़छाड़ के मामले में कार्रवाई न होने पर पीड़िता द्वारा मुख्यमंत्री आवास के बाहर आत्मदाह के प्रयास का मामला तूल पकड़ रहा है। पुलिस अधीक्षक अभिषेक यादव ने आरोपित एसओजी प्रभारी समेत पूरी टीम को लाइन हाजिर कर दिया है। इस एक्शन से महकमे में खलबली मच गई है। वहीं पुलिस उपमहानिरीक्षक बरेली ने इस मामले की जांच गैरजनपद के पुलिस अधिकारी को सौंपी है। जिससे आरोपितों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई होने की संभावना जताई जा रही है।

घर में घुसी थी एसओजी टीम

हजारा थाना क्षेत्र के गांव की निवासी महिला ने बताया कि विगत 23 अप्रैल रात वह अपनी बहन के साथ अपने झाले में सो रही थी। तभी रात लगभग डेढ़ बजे एसओजी प्रभारी एक सिपाही के अलावा अन्य साथियों संग घर में घुस आए। आरोप है कि एसओजी टीम ने महिला के साथ छेड़छाड़ की। विरोध करने पर मारपीट करते हुए पिस्टल तान दी। मामला पुलिसकर्मियों से जुड़ा होने के कारण हजारा थाना पुलिस मुकदमा दर्ज करने को टाल-मटोल करती रही। जिसके बाद छह अज्ञात के खिलाफ 15 मई को मुकदमा दर्ज किया गया।

पीड़ित ने मामले की जांच सीबीसीआईडी से कराने की मांग की

आरोप है एसओजी प्रभारी और सिपाही के खिलाफ कार्रवाई नहीं की न ही आरोपितों की गिरफ्तारी हुई। बल्कि पीड़िता पर मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाए जाने की बात कही। पीड़िता ने मामले की जांच सीबीसीआईडी से करने की मांग की है। न्याय न मिलने पर महिला ने अपने भाई और भांजे के साथ विगत दिनों लखनऊ में सीएम आवास के नजदीक आत्मदाह का प्रयास किया था। जिसके बाद यह मामला तूल पकड़ने लगा। मुख्यमंत्री कार्यालय ने भी मामला का संज्ञान लेने के साथ कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

पुलिस उपमहानिरीक्षक के स्तर से भी किसी गैरजनपद के अधिकारी से जांच कराई जा रही है

पुलिस अधीक्षक अभिषेक यादव ने बताया कि इस मामले में लापरवाही बरतने पर निरीक्षक क्रांतिवीर, हेड कांस्टेबिल अजब सिंह, कांस्टेबिल शाहनवाज, कुलदीप, अजय को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर किया गया है। हालांकि अभी तक एसओजी प्रभारी के पद पर किसी अन्य की नियुक्ति नहीं की गई है। पुलिस अधीक्षक के मुताबिक इस मामले में पुलिस उपमहानिरीक्षक के स्तर से भी किसी गैरजनपद के अधिकारी से जांच कराई जा रही है।

'आपातकाल गांधी परिवार की सोच का परिचायक', इमरजेंसी के 50 साल पर बोले भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी

आर्यावर्त संवाददाता

मुरादाबाद। आपातकाल गांधी परिवार की उस सोच का परिचायक था जिसमें स्पष्ट हो गया था कि उनके लिए पार्टी और सत्ता परिवार के लिए होती है। देश और संविधान के लिए नहीं। आज कांग्रेस में चेहरे बदल गए हैं लेकिन तानाशाही की प्रवृत्ति और सत्ता का लोभ जस का तस है। 50 वर्ष बाद आज आपातकाल को याद करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यह इतिहास की एक घटना मात्र नहीं बल्कि कांग्रेस की मानसिकता का प्रमाण भी है। इंदिरा गांधी की यही तानाशाही मानसिकता आज कांग्रेस के नेतृत्व में दिखाई देती है। आपातकाल के 50 वर्ष को काला दिवस के रूप में मना रही भाजपा कार्यालय पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी ने यह बातें कहीं। वह यही नहीं रुके।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा, कि कांग्रेस जिन संस्थाओं को लोकतंत्र का रक्षक रहती है उन्हीं संस्थाओं को अपने शासन में रबर स्टांप बना देती है। यह दोहरापन आज भी उनकी राजनीति में स्पष्ट दिखाई देता है। कांग्रेस पार्टी और गांधी परिवार की मानसिकता आज भी 'हम ही राष्ट्र हैं' है। यही कारण है कि उन्हें जनता का स्पष्ट बहुमत भी हमेशा लोकतंत्र का संकट नजर आता है।

जावेद अली की टिप्पणी पर दिया जवाब

प्रदेश अध्यक्ष ने सपा नेता जावेद अली की टिप्पणी कि कांग्रेस ने घोषित इमरजेंसी लगाई थी जबकि भाजपा सरकार में अघोषित इमरजेंसी है। इस पर कहा कि उन्हें अपनी पार्टी के लोगों से पहले चर्चा कर लेनी चाहिए तब ऐसी टिप्पणी करनी चाहिए थी।

aसत्ता के नशे में कांग्रेस ने थोपा था आपातकाल : कपिल देव अग्रवाल

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश सरकार के व्यावसायिक व कौशल विकास मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने भाजपा कार्यालय पर जिलाध्यक्ष सुशील त्रिपाठी की अध्यक्षता व विशिष्ट अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश त्रिवेदी की मौजूदगी में पत्रकारों से वार्ता करते हुए 25 जून को लोकतंत्र का सबसे काला अध्याय बताया।

उन्होंने कांग्रेस पर तीखा हमला बोला और लोकतंत्र की रक्षा में जुटे सेनानियों को नमन किया।कहा कांग्रेस ने 50 वर्ष पहले सत्ता के नशे में देश पर आपातकाल थोपा था।इस दौरान संविधान, अभिव्यक्ति की आजादी और नागरिक अधिकारों का गला घोंटा गया। हम उन सभी लोकतंत्र सेनानियों को नमन करते हैं, जिन्होंने उस समय अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाई।उन्होंने कहा आज का दिन लोकतंत्र व संविधान की हत्या के रूप में याद किया जाता है।आपातकाल के दौरान मीडिया व प्रेस की स्वतंत्रता, न्यायपालिका की निष्पक्षता और नागरिकों के मौलिक अधिकारों को दबा दिया गया था।आपातकाल हमें उस अंधेरे दौर की याद दिलाता है,जब सत्ता में मदहोश होकर जनता की आज़ादी को छीन लिया गया था।इंदिरा सरकार द्वारा 1975 से 77 तक लगायें गये आपातकाल के दौरान लोकतंत्र व संविधान की आत्मा पर कुठाराघात किया था। कांग्रेस ने अपने दम्भ और अहंकार में क्रूरता और दमन की पराकाष्ठा पार की थी।उन्होंने कहा आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत का संविधान मजबूत हो रहा है और देश आगे बढ़ रहा है।आज पूरी दुनिया में भारत के लोकतंत्र व संविधान की जय जयकार हो रही है।प्रेस कांफ्रेंस में मीडिया प्रमुख विजय रघुवंशी,राहुल भान मिश्रा मौजूद रहे।

तकनीक आधारित शिक्षा से ही युवा बनेंगे आत्मनिर्भर : कपिल देव

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं प्रभारी मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने बुधवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, सुलतानपुर का दौरा कर संस्थान की गतिविधियों का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रशिक्षार्थियों को तकनीक और परिश्रम को जीवन का आधार बनाकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में भागीदारी निभाने का आह्वान किया। निरीक्षण के दौरान कौशल विकास मंत्री ने टी.टी.एल. योजना के अन्तर्गत संचालित ₹इण्डस्ट्रियल रोबोटिक्स एवं डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग टेक्नीशियन₹ व्यवसाय के प्रशिक्षुओं द्वारा तैयार रोबोटिक आर्म का प्रदर्शन देखा और छात्रों के नवाचार की सराहना की। उन्होंने कहा कि आज का युग तकनीक आधारित ज्ञान का है। हमारे युवा अगर हुनर और तकनीकी दक्षता से लैस होंगे तो देश को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। संस्थान में संचालित टी.टी.एल., जी.आई.टी.आई., कौशल विकास मिशन एवं आई.टी.ओ.टी. से जुड़े प्रशिक्षार्थियों को एक साथ संबोधित करते हुए मंत्री अग्रवाल ने निर्देशित किया कि प्रशिक्षण के साथ ही उद्योगों से जुड़ाव की प्रक्रिया और तेज की जाए ताकि युवा सीधे रोजगार से जुड़ सकें। हर संस्थान में टेक्नोलॉजी आधारित व्यवसायों को प्राथमिकता दी जाए। प्रशिक्षकों की क्षमता वृद्धि हेतु समय-समय पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए। उद्योग-शिक्षा समन्वय मंच के माध्यम से स्थानीय उद्योगों की मांग के अनुसार कोर्स संरचना में संशोधन किया जाए।

राष्ट्रीय लोकदल में सदस्यता अभियान तेज

सुलतानपुर। जिला मुख्यालय स्थित एक होटल में मंगलवार को राष्ट्रीय लोकदल के वरिष्ठ नेताओं का स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में रामाशीष राय पूर्व एमएलसी व प्रदेश अध्यक्ष, आदित्य विक्रम सिंह प्रदेश उपाध्यक्ष एवं सदस्यता प्रभारी, तथा रजनीकांत मिश्रा प्रदेश महासचिव व जॉइनिंग कमेटी सदस्य का पार्टी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों द्वारा प्रतीक चिन्ह और फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया गया। तत्पश्चात प्रदेश अध्यक्ष रामाशीष राय ने सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से संवाद किया तथा सदस्यता अभियान की समीक्षा की। उन्होंने जिला अध्यक्ष बेलाल अहमद एडवोकेट को सदस्यता रसीद बुक सौंपते हुए अभियान को गति देने के निर्देश दिए और कहा कि सभी पदाधिकारियों का सक्रिय सदस्य बनना अनिवार्य है। साथ ही आगामी पंचायत चुनाव को लेकर रणनीतिक दिशा-निर्देश भी दिए।

बुजुर्ग ने पत्नी की निर्मम हत्या कर नाती पर भी किया हमला, वारदात को अंजाम देकर हुआ फरार

आर्यावर्त संवाददाता

घाटमपुर। सजेती थाना क्षेत्र के कुरियां गांव में एक बुजुर्ग ने अपनी पत्नी की धारदार हथियार से निर्मम हत्या कर दी। घर में मौजूद नाती का भी गला दबा दिया। हालांकि, नाती को ज्यादा चोट नहीं आई। हमले के बाद बुजुर्ग भाग निकला। सूचना पर सजेती पुलिस मौके पर पहुंची। फोरेंसिक टीम को बुलाया गया है।

कुरियां निवासी बुजुर्ग होरीलाल कोरी, पत्नी 55 साल की शिवकांती और नादी 10 साल के रौनक के साथ गांव में रहता था। उसके चार बेटे और दो बेटियां हैं। सभी विवाहित हैं और बाहर रहते हैं। होरीलाल भी पहले परिवार समेत पंजाब में काम करता था। करीब एक माह से वह घर पर है।

मंगलवार रात उसका पत्नी से किसी बात को लेकर विवाद हो गया। नाती रौनक का कहना है कि बाबा ने कुलाबा (गन्ना काटने का धारदार औजार) से दादी पर हमला कर दिया। रौनक के मुताबिक खटपट होने पर वह बाहर आया तो बाबा ने कुलाबा से उसे भी डराया। इसके बाद गला पकड़कर घर के अंदर ले गए और दबा दिया। वह गिर पड़ा तो बाबा भाग गए। सजेती थाना प्रभारी कमलेश राय ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है। फोरेंसिक टीम बुलाकर पड़ताल की जा रही है।

झगड़ा बढ़ा और दंपती ने लगा ली फांसी, पत्नी की मौत, पति ICU में, दो मासूम बच्चों पर टूटा दुखों का पहाड़

आर्यावर्त संवाददाता

बिजनौर। बिजनौर कोतवाली देहात क्षेत्र के गांव रांडोवाला में मंगलवार रात एक दंपती के बीच हुआ विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों ने फांसी लगाने जैसा खौफनाक कदम उठा लिया।

इस दर्दनाक घटना में पत्नी त्रिवेणी की मौके पर मौत हो गई, जबकि पति शुभम को बेहोशी की हालत में फंदे से उतारकर परिजनों ने बिजनौर के निजी अस्पताल में भर्ती कराया। शुभम की हालत अब भी बेहद नाजुक बनी हुई है।

करीब छह साल पहले गांव सुनपता निवासी विरेंद्र कुमार की पुत्री त्रिवेणी की शादी गांव रांडोवाला के शुभम से हुई थी। दोनों के एक चार साल का बेटा और डेढ़ साल की बेटी है। मंगलवार रात किसी बात पर दंपती के बीच विवाद हुआ और इसी के बाद दोनों ने घर के अंदर ही एक कमरे में कुंदे से रस्सी बांधने के बाद लटककर फांसी लगा ली। परिजनों ने जब दरवाजा तोड़ा तो त्रिवेणी की सांसें थम चुकी थीं, जबकि शुभम को समय रहते नीचे उतार लिया गया।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की गंभीरता को देखते हुए सीओ अंजनी कुमार चतुर्वेदी, एसपी ग्रामीण और थाना प्रभारी ने भी मौके का निरीक्षण किया। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, शुभम को वेंटिलेटर पर रखा गया है और उसकी हालत अभी भी बेहद नाजुक बनी हुई है।

'हमने कफन खरीद लिया था, दोबारा जिंदगी मिली है...' ईरान से लौटकर बताया कैसे काटे दिन?

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

बरेली। ईरान की जियारत से लौटे उत्तर प्रदेश के बरेली के जायरीन आज अपने वतन की मिट्टी को चूमते हुए खुदा का शुक्र अदा कर रहे हैं। लौटते वक्त आंखों में खौफ था। लेकिन दिल में राहत थी कि अब अपनों के बीच हैं। ईरान में बिताए गए वह चार दिन किसी डरावने सपने से कम नहीं थे। उनके सिर के ऊपर उड़ती मिसाइलें, धमाकों की गूंज और बंद एयरपोर्ट। उन्हें हर पल लगता था कि अगला निशाना कहीं वह न बन जाएं। बरेली के कंघी टोला की नजमा बेगम जो जियारत कर लौटी हैं। वह बताती हैं कि चार दिन ऐसे बीते कि लगने लगा अब वतन लौटना मुमकिन नहीं, जहां ठहरे थे। वहां से आसमान में मिसाइलें उड़ती दिखती थीं।एक वक्त तो दिल बैठ गया। फिर सोचा कि अगर मौत यहां भी आई तो शहादत के तौर पर कबूल कर लेंगे। हमने कफन तक खरीद लिया था। ईरान का माहौल काफी जज्बाती था। लोग एक-दूसरे को हौसला दे रहे थे। मगर अंदर से सब डरे हुए थे।

फ्लाइट कैंसिल की खबर ने हिला दिया

थाना बारादरी क्षेत्र के मीरा की पैठ की रुखसार नकवी कहती हैं, 'जब फ्लाइट कैंसिल होने की खबर मिली तो दिल जैसे कांप गया। सारी उम्मीदें खत्म हो गईं। रात को नींद नहीं आती थी। बस एक ही दुआ थी कि किसी तरह अपने वतन वापसी हो जाए। भारतीय दूतावास ने मदद की और हमें कोम से मशद पहुंचाया गया। मशद में अच्छे होटल में ठहराया गया। मगर दिल अपने देश की मिट्टी को देखने के लिए बेचैन था।

मिसाइलों का वीडियो बना रहे थे

बरेली के थाना प्रेमनगर क्षेत्र के किला छावनी के हसन जाफर ने अपनी आपबीती बताते हुए कहा कि वहां के लोगों को ऐसी आदत हो गई थी कि वो उड़ती मिसाइलों के वीडियो बना रहे थे। जबकि हम भारतीय जायरीन सहमे हुए थे। धमाकों की आवाजें दिल दहला देती थीं। मशद एयरपोर्ट तक मोबाइल फोन बंद करवा दिए गए थे। हर कोई दुआ कर रहा था कि सुरक्षित अपने वतन पहुंच जाएं।

दिल्ली एयरपोर्ट पर तिरंगे से स्वागत

किला की मुजीब जहरा ने बताया कि जायरीन को ज्यादा दिक्कत नहीं हुईं। लेकिन डर तो सबके दिल में था। भारतीय दूतावास के मीसम रजा और ईरान में मौलाना हैदर साहब ने बहुत मदद की। जब दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचे और वहां लोगों ने तिरंगा थमाया तो आंखें भर आईं। ऐसा लगा जैसे फिर से जिंदगी मिली हो। भारत सरकार और ईरान सरकार का शुक्रिया अदा करती हूं।

अपने देश आकर सुकून मिला

ईरान की जियारत पर जाने वाले बरेली के ये जायरीन अपने साथ एक ऐसी कहानी लेकर लौटे हैं, जो उन्हें जिंदगी भर याद रहेंगी। जब सिर के ऊपर मौत मंडरा रही थी। तब भी उन्होंने हौसला नहीं खोया। ये लोग बताते हैं कि ईरान में रहना जितना मुश्किल था। उससे ज्यादा मुश्किल वतन से दूर रहना था। अब जब सभी सकुशल अपने वतन लौट आए हैं तो अपनों के गले लगकर उनकी आंखों से बहते आंसू सब बयां कर रहे हैं।

हापुड़ में छापा पड़ा तो खुल गया लाखों की टैक्स चोरी का खेल, जांच में सामने आए चौंकाने वाले तथ्य

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

हापुड़। गाजियाबाद जीएसटी की विशेष अनुसंधान शाखा (एसआइबी) ने मंगलवार को थाना देहात क्षेत्र के गांव असौड़ा के निकट किठौर मार्ग पर एक ई-वेस्ट कारोबारी की फर्म पर छापेमार कार्रवाई की। जांच में पाया गया कि फर्म संचालक ने फर्जी तरीके से 95 लाख रुपये की इनपुट टैक्स क्रेडिट (आइटीसी) हड़पकर टैक्स चोरी की। कार्रवाई के बाद फर्म मालिक ने में 40 लाख रुपये जमा कराए।

वहीं, टीम ने एक लाख रुपये का स्क्रैप सीज किया। एसआइबी के संयुक्त आयुक्त अजय प्रताप सिंह के नेतृत्व में उपायुक्त विमल दुबे और चार सदस्यीय टीम ने असौड़ा के किठौर रोड पर पीर के समीप स्थित फाइन ट्रेडिंग कंपनी मंगलवार को छापामार कार्रवाई की। यह फर्म टीवी, फ्रिज जैसे इलेक्ट्रानिक कचरे (ई-वेस्ट) के कारोबार में सक्रिय थी।

30 नवंबर 2024 को फर्म सेंट्रल जीएसटी (सीजीएसटी) में पंजीकृत हुई थी। विभाग को कई मानक पर इस फर्म के कारोबार में हाई रिस्क का संदेह था। प्रारंभिक जांच में पता चला कि फर्म दिल्ली की कुछ कंपनियों के साथ कारोबार कर रही थी। मगर, इसकी गतिविधियां संदिग्ध थीं। वित्तीय वर्ष 2024-25 में फर्म ने पांच करोड़ 29 लाख रुपये का कारोबार दिखाया था, जो जांच के दायरे में आया है।

फर्जी आइटीसी का खेल

जांच के दौरान चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। फर्म संचालक ने ऐसी कंपनियों से माल की खरीद दिखाई, जिनकी सप्लाई चेन में कोई वैध आइटीसी उपलब्ध नहीं थी। संचालक टैक्स को फर्जी आइटीसी के जरिए समायोजित कर रहा था। नकद में कोई टैक्स जमा नहीं किया जा रहा था। इस तरह फर्जी आईटीसी क्लेम कर टैक्स चोरी का पर्दाफाश हुआ है।

त्वरित कार्रवाई और जब्ती

एसआइबी की टीम ने मौके पर ही सख्ती दिखाते हुए फर्म संचालक से 40 लाख रुपये तुरंत विभाग के खाते में जमा करवाए। इसके साथ ही, एक लाख रुपये मूल्य का स्क्रैप भी सीज किया गया। संयुक्त आयुक्त अजय प्रताप सिंह ने बताया कि फर्म के खिलाफ जांच अभी जारी है और जिन दिल्ली की फर्मों के साथ इसका कारोबार था, उनकी भी गहन जांच की जा रही है। यदि इन फर्मों में भी टैक्स चोरी पाई गई, तो उनके खिलाफ भी कड़ी कार्रवाई होगी।

कार्रवाई में शामिल अधिकारी

इस कार्रवाई में संयुक्त आयुक्त अजय प्रताप सिंह और उपायुक्त विमल दुबे के अलावा सीटीओ सतीश तिवारी और रोहित कुमार भी शामिल थे। टीम ने सुनियोजित तरीके से कार्रवाई को अंजाम दिया। जिससे टैक्स चोरी के इस बड़े मामले का खुलासा हो सका।

जीएसटी विभाग की चेतावनी

संयुक्त आयुक्त अजय प्रताप सिंह ने चेतावनी दी कि जीएसटी चोरी करने वालों के खिलाफ विभाग की नजरें तेज हैं। टीमें लगातार संदिग्ध फर्मों पर निगरानी रख रही हैं। टैक्स चोरी करने वालों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कारोबारियों से अपील की कि वे पारदर्शी तरीके से कारोबार करें और जीएसटी नियमों का पालन करें।

वेस्ट कारोबार पर बढ़ती नजर

ई-वेस्ट कारोबार हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ा है। इसके साथ ही इस क्षेत्र में टैक्स चोरी के मामले भी सामने आ रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार फर्जी बिलिंग और आइटीसी के दुरुपयोग के जरिए कई फर्में सरकार को चूना लगा रही हैं। इस कार्रवाई से अन्य कारोबारियों में भी खलबली मच गई है। उधर, जीएसटी विभाग की सक्रियता से टैक्स चोरी पर अंकुश लगने की उम्मीद है।

अच्छी मानसूनी बारिश के लिए अभी और करना होगा इंतजार, फिलहाल उमस वाली गर्मी से नहीं मिलेगी राहत

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

कानपुर। मानसून आने के बाद लगभग एक सप्ताह तक हर दिन पानी बरसा लेकिन मंगलवार को तापमान के साथ ही मौसम में उमस भी बढ़ गई। मौसम का यह खेल अब दो से तीन दिन तक जारी रहेगा। दिन में गर्मी और रात में हल्की वर्षा के आसार हैं लेकिन दो से तीन दिन के बाद मानसून असर दिखा सकता है। तब पूरे सप्ताह भर अच्छी वर्षा होगी। वर्षा कराने वाला मानसून सिस्टम अभी पूरी तरह से सक्रिय नहीं हो सका है। मंगलवार को दिन में बादल भी कम छाए रहे, इससे दिन का अधिकतम तापमान भी बढ़ गया। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मौसम केंद्र में अधिकतम तापमान 34.8 और न्यूनतम तापमान 26.2 डिग्री दर्ज किया गया है। एक दिन पहले अधिकतम तापमान 31.7 और न्यूनतम तापमान 25.8 डिग्री सेल्सियस रहा है। अधिकतम तापमान में तीन डिग्री से भी ज्यादा वृद्धि होने से दिन में उमस वाली गर्मी ने लोगों को परेशान किया। दोपहर में उमस बढ़ने का परिणाम रहा कि शहर के कई इलाकों में थोड़ी देर के लिए पानी भी बरस गया। मौसम विशेषज्ञ डा.एसएन सुनील पांडेय के अनुसार मौसम का यही मिजाज अगले दो से तीन दिन तक रह सकता है। बुधवार को भी धूप के साथ उमस वाली गर्मी सताएगी लेकिन रात में हल्की वर्षा के आसार बन रहे हैं। गर्मी, उमस और हल्की वर्षा का यह मौसम अब दो से तीन दिन तक ही रहेगा। इसके बाद मानसून की लगातार वर्षा का मौसम शुरू होगा जो जुलाई के पहले सप्ताह तक असर दिखाएगा। मंगलवार को चकेरी एयरफोर्स स्टेशन पर भी दिन का अधिकतम तापमान 37.6 और न्यूनतम तापमान 27.2 डिग्री रहा है।

संविधान में धर्म निरपेक्ष और समाजवादी शब्द जोड़ना भारत की आत्मा पर कुठाराघात, कहा ये पाप जैसा

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आपातकाल के दौरान संविधान की प्रस्तावना में संशोधन करके धर्म निरपेक्ष और समाजवादी शब्द जोड़ना भारत की आत्मा पर कुठाराघात था। कांग्रेस को आपातकाल के लिए दलितों, वंचितों एवं देशवासियों से माफी मांगनी चाहिए। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने अपनी लेखनी के माध्यम से जिन दलितों एवं वंचितों को अधिकार दिलाया, कांग्रेस ने उनकी आवाज को दबाने का कार्य किया।

योगी बुधवार को लोकभवन में आपातकाल की 50वीं बरसी पर आयोजित संविधान हत्या दिवस के अवसर पर 'भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय' विषयक संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने लोकतंत्र सेनानियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को कैशलेस उपचार की सुविधा देने की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि सपा और आरजेडी ने संविधान हत्या दिवस पर कोई बयान नहीं दिया, जबकि दोनों कांग्रेस के इस कृत्य के खिलाफ थे। दोनों अपने स्वार्थ के लिए अब कांग्रेस के सामने नाक रगड़ रहे हैं।

लोकतंत्र और संविधान की दुहाई देते हैं, लेकिन संविधान का गला घोंटने और डॉ. आंबेडकर का अपमान करने वालों को गले का हार बनाते हैं। कांग्रेस ने 25 जून 1975 को विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका के अधिकारों को बंधक बना लिया था। सेंसरशिप से मीडिया का गला घोंटा था। तत्कालीन पीएम इंदिरा गांधी के इस पाप को भुलाया नहीं जा सकता है। संगोष्ठी के शुभारंभ से पूर्व सीएम ने 'आपातकाल की त्रासदी' विषयक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के कवर पेज एवं चित्रों के माध्यम से लोकतंत्र सेनानियों के संघर्ष और तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार द्वारा उन पर किए अत्याचारों को प्रदर्शित किया गया था। इस अवसर पर कई जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

साझा किए अपने अनुभव

इस दौरान कई लोकतंत्र सेनानियों ने आपातकाल की यातनाओं को साझा किया। किसी ने अपने भूमिगत होने के किस्से सुनाए तो किसी ने थाने एवं जेल के अपने अनुभवों को बताया। वित्त एवं ससंदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनाए रखने के लिए पूरे देश को जेल बना दिया था।

विधान परिषद के सभापति कुंवर मानवेंद्र सिंह ने बरेली जेल के अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री ने अपनी निरंकुश सत्ता का वर्चस्व बरकरार रखने के लिए आपातकाल जैसा दमनकारी निर्णय लिया। इस दौरान सीएम ने 26 लोकतंत्र सेनानियों कृष्ण कुमार दीक्षित, गणेश राय, राकेश स्वरूप निगम, अजीत कुमार सिंह, सुरेश शिवजी रानी, डॉक्टर अजय शर्मा, जयदेव आहूजा, हरि श्याम रस्तोगी, राम किशोर शर्मा, अशोक शर्मा, डॉक्टर संतोष कुमार वाजपेयी, डॉ. बलवेंद्र अवस्थी, मधुकर मिश्रा, रामतीर्थ वर्मा, सुरेश चतुर्वेदी, सत्यप्रकाश जैन, रामचंद्र सिंह, आशुतोष पाठक, डॉक्टर राम लोलाक उपाध्याय, सरल मालवीय, सतीश चंद्र गौड़, दिनेश प्रताप सिंह, दिनेश अग्निहोत्री, संजय मिश्रा, भारत त्रिपाठी, धीरेंद्र श्रीवास्तव का पटका पहनाकर सम्मानित किया।

लखनऊ में स्मार्ट सिटी कंट्रोल रूम का निरीक्षण

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत शहरवासियों को बेहतर सुविधाएं और त्वरित सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से नगर आयुक्त गौरव कुमार ने बुधवार को स्मार्ट सिटी कंट्रोल रूम का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त ने कंट्रोल रूम में कार्यरत कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि जनता से प्राप्त शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर न केवल संबंधित अधिकारियों तक तत्काल पहुंचाया जाए, बल्कि समाधान की निरंतर मॉनिटरिंग करते हुए शिकायतकर्ता से फीडबैक भी लिया जाए।निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जन शिकायतों पर त्वरित, प्रभावी और गुणवत्तापरक कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि नगर निगम के अभियंत्रण, स्वास्थ्य, सफाई और अन्य संबद्ध विभागों की जिम्मेदारी है कि वे समस्याओं का समाधान बिना देरी के सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि नागरिकों के विश्वास को बनाए रखने के लिए पारदर्शिता और जवाबदेही आवश्यक है।बारिश के मौसम को ध्यान में रखते हुए नगर आयुक्त ने जलभराव की समस्या पर विशेष रूप से सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुख्य मार्गों, वीआईपी क्षेत्रों और जलभराव की दृष्टि से संवेदनशील इलाकों में विशेष निगरानी रखी जाए तथा जरूरत पड़ने पर तत्काल पंपिंग और सफाई की व्यवस्था की जाए, ताकि लोगों को आवागमन में कोई कठिनाई न हो।नगर आयुक्त ने 311 मोबाइल एप पर प्राप्त होने वाली शिकायतों की गंभीरता से समीक्षा करते हुए कहा कि यह एप नगर निगम और नागरिकों के बीच संवाद का एक प्रभावी माध्यम है।

लखनऊ में अतिक्रमण के खिलाफ नगर निगम की बड़ी कार्रवाई, तीन जोनों में सैकड़ों अस्थायी ढांचे हटाए गए

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। शहर को अतिक्रमण मुक्त और यातायात के लिए सुगम बनाने के उद्देश्य से नगर निगम लखनऊ द्वारा बुधवार को विभिन्न क्षेत्रों में एक सघन अभियान चलाया गया। जोन-3, जोन-5 और जोन-6 में एक साथ की गई कार्रवाई में दर्जनों सड़कों, चौराहों और सार्वजनिक स्थलों से अस्थायी दुकानों, ढांचों और ठेलों को हटाया गया। अभियान के दौरान नगर निगम प्रवर्तन दल के साथ-साथ पुलिस बल की भी तैनाती की गई, जिससे किसी प्रकार की अव्यवस्था न उत्पन्न हो।जोन-3 में हनुमान सेतु से लेकर डालीगंज पुल होते हुए बंधा रोड तक की सड़कों को अतिक्रमण से मुक्त कराने के लिए व्यापक कार्यवाही की गई। जोनल अधिकारी अमरजीत यादव के नेतृत्व में चाट, फल और कफन बेचने वाली अस्थायी दुकानों को हटवाया गया। इसके अतिरिक्त, मटन चौराहे पर बनी एक अस्थायी खाने की दुकान और गैराज को भी तोड़ दिया गया। इस अभियान में एक लोहे का काउंटर और एक लकड़ी का ठेला जब्त किया गया।जोन-6 में जनता से प्राप्त आईजीआरएस शिकायतों के आधार पर हैदरगंज द्वितीय, कन्हैया माधवपुर प्रथम और चौक बाजार क्षेत्र में अभियान चलाया गया। जोनल अधिकारी मनोज यादव के नेतृत्व में एकता नगर चौराहे एवं मायापुरम बादशाहखेड़ा के आसपास अवैध कब्जों को हटाया गया। कोनेश्वर मंदिर से टण्डन फव्वारा मार्ग तक फैले अतिक्रमण को हटाते हुए 15 ठेले, 10 काउंटर, 15 अस्थायी दुकानें हटाई गईं। साथ ही बड़ी मात्रा में सामग्रियां, जिनमें लोहे के काउंटर, इलेक्ट्रॉनिक तराजू, कैरेट, स्टूल और अन्य दुकानी उपकरण शामिल थे, जब्त किए गए। अतिक्रमणकारियों को सख्त चेतावनी दी गई कि यदि दोबारा अवैध कब्जा किया गया तो उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। क्षेत्रीय थानाध्यक्ष को पत्र भेजकर नियमित निगरानी का अनुरोध भी किया गया है।जोन-5 में सरोजनी नगर प्रथम वार्ड के अंतर्गत अमौसी पुलिस चौकी के सामने सड़क पर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। यहां ठेले, गाड़ियां और अन्य अस्थायी निर्माण अव्यवस्थित रूप से खड़े थे, जिससे मार्ग अवरुद्ध हो रहा था। जोनल अधिकारी नंदकिशोर के नेतृत्व में अभियान चलाते हुए 3 काउंटर, 1 गुमटी और 10 ठेले हटाए गए। कर अधीक्षक आलोक कुमार श्रीवास्तव, राजस्व निरीक्षकगण और प्रवर्तन टीम 296 की उपस्थिति में यह कार्यवाही शांतिपूर्वक संपन्न की गई।

लखनऊ में महिला ने गोमती नदी में कूदकर की आत्महत्या, मौके पर ही मौत

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में आज दोपहर एक महिला ने गोमती नदी में छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से महिला को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।घटना थाना हजरतगंज क्षेत्र के लक्ष्मण मेला मैदान के पास की है, जहां दोपहर करीब 2 बजे 25 वर्षीय कविता निषाद ने गोमती नदी में कूदकर जान दे दी। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार कविता निषाद पत्नी स्व. महेश निषाद, मूल रूप से अहिमामऊ, लखनऊ की रहने वाली थी और इन दिनों सिकंदर नगर फेस-2 में अपने भाई के घर बच्चों के साथ रह रही थी।घटना की सूचना एक महिला द्वारा मोबाइल फोन के माध्यम से पुलिस को दी गई थी। मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों और परिजनों की मदद से महिला को नदी से बाहर निकाला और तत्काल सिविल अस्पताल ले जाया गया।

विकलांग विधवा के साथ धोखाधड़ी और शारीरिक शोषण का सनसनीखेज मामला

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। सुशांत गोल्फ सिटी थाना क्षेत्र में एक विकलांग विधवा के साथ धोखाधड़ी, शारीरिक शोषण और जमीन हड़पने का गंभीर मामला सामने आया है। पीड़िता शिवरानी रावत, पत्नी स्वर्गीय राम लखन, निवासिनी ग्राम निजामपुर मंझिगवा, ने अजय गौतम नामक व्यक्ति पर शादी का झांसा देकर लाखों रुपये हड़पने, जमीन बिकवाने और जबरन शारीरिक संबंध बनाने के गंभीर आरोप लगाए हैं। स्थानीय पुलिस पर भी शिकायत दर्ज न करने और पीड़िता को अपमानित करने का आरोप है।

पीड़िता की दर्दनाक कहानी

शिवरानी रावत, जो पैर से विकलांग हैं, ने बताया कि उनके पति राम लखन का निधन लगभग 10 वर्ष पूर्व हो गया था। उनकी कोई संतान नहीं है, जिसके कारण वह अकेले जीवन यापन कर रही थीं। करीब आठ महीने पहले उनकी भतीजी अनीता, पत्नी सूरज, निवासिनी ग्राम कालू खेड़ा, कोतवाली मोहनलालगंज, ने उन्हें अजय गौतम, पुत्र किशुन, निवासी ग्राम कलंदरखेड़ा, मोहनलालगंज, से परिचय कराया। अनीता के बार-बार कहने पर शिवरानी ने अजय से बातचीत शुरू की। अजय ने शुरुआत में शिवरानी के प्रति सहानुभूति दिखाई और उनकी आर्थिक और शारीरिक स्थिति का हवाला देकर शादी का प्रस्ताव रखा। शिवरानी ने बताया कि अजय ने उनकी भावनाओं का फायदा उठाया और धीरे-धीरे उन्हें अपने झांसे में ले लिया।

जमीन बिकवाने और शादी का झांसा

अजय ने शिवरानी को उनकी 22 बिस्वा जमीन (गाटा संख्या 396, रकबा 0.9180 हेक्टेयर और गाटा संख्या 441स, रकबा 0.7210 हेक्टेयर), ग्राम निजामपुर मंझिगवा, बेचने का सुझाव दिया। उसने वादा किया कि वह इसके बदले में कहीं और जमीन दिलवाएगा और उनसे शादी करेगा। शिवरानी उसकी बातों में आ गईं। 7 जून 2025 को अजय गौतम, शिवरानी को लखनऊ कचहरी ले गया और वहां शादी की बात कहकर कुछ कागजों पर हस्ताक्षर करवाए। शिवरानी ने भरोसा करके हस्ताक्षर कर दिए। इसके बाद अजय ने 9 जून 2025 को उनकी जमीन को रेखा, पत्नी अज्ञात, को 65 लाख रुपये में बेचवा दिया, जिसमें 32,6000 लाख रुपये शिवरानी के खाते में ट्रांसफर किए गए और 20 लाख रुपये नकद ले लिए।

जमीन बिकने के बाद अजय ने शिवरानी के खाते से 12.06 लाख रुपये ब्राइट फोर व्हील कंपनी के खाते में ट्रांसफर करवाकर एक चार पहिया वाहन खरीदा, जिसे वह स्वयं चला रहा है। इसके अलावा, उसने 9 जून को 3 लाख, 10 जून को 15 लाख और 16 जून को 2 लाख रुपये अपने खाते में डलवाए। इतना ही नहीं, उसने एक वीडियो बनवाकर शिवरानी से जबरन कहलवाया कि उन्होंने अपनी स्वेच्छा से वाहन खरीदा है। पैसों और जमीन का दुरुपयोग करने के बाद अजय अचानक गायब हो गया। जब शिवरानी ने उससे संपर्क करने की कोशिश की, तो उसने धमकी दी कि वह चाहें तो कहीं भी शिकायत कर लें, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि उसकी 'ऊपर तक पहुंच' है।

पूरे मामले में पीड़िता के द्वारा मुख्यमंत्री सहित आला अधिकारियों से शिकायत की गई है।

व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने पीडब्ल्यूडी अशिकारियो को बताई समस्याएं

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। अर्जुनगंज से अहिमामऊ तक पीडब्ल्यूडी द्वारा कराए जा रहे सड़क चौड़ीकरण व नाला निर्माण कार्य मे बरती जा रही अनिमितता को लेकर सर्वहित व्यापार मंडल के बैनर तले अर्जुनगंज सरसवां के व्यापारियों ने पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों के साथ बैठक की। साथ ही मौके पर जाकर नाले के निर्माण संबंधी बरती जा रही लापरवाही की जानकारी दी। इस मौके पर पीडब्ल्यूडी विभाग के एई सुनील कुमार सिंह, व जेई श्रवण यादव के साथ विजली विभाग के एई अजीत सिंह ने स्थलीय निरीक्षण के साथ व्यापारियों की समस्या सुनी। उपरोक्त अधिकारियों ने बारिश से पहले नाला निर्माण पूरा करने का अस्वासन दिया।

इस मौके पर व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार यादव व्यापार मंडल अर्जुनगंज के अध्यक्ष प्रीतम मिश्र के साथ व्यापारी मंसूर अहमद,सिकंदर पाल, दीपांशु गुप्ता, दया खंडेलवाल, वीरेंद्र यादव, राजकुमार यादव, सुनील अग्रवाल, योगेश यादव, राहुल शुक्ला के साथ मौजूद रहे

वंचित समुदायों को स्वास्थ्य सेवा से जोड़ने के लिए एमएसडी फार्मास्यूटिकल्स और स्माइल फाउंडेशन की पहल

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को जमीनी स्तर तक सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए एमएसडी फार्मास्यूटिकल्स प्राइवेट लिमिटेड ने आज स्माइल फाउंडेशन के साथ साझेदारी में ₹स्माइल ऑन व्हील्स₹ मोबाइल मेडिकल यूनिट की शुरुआत की। इस संयुक्त पहल के तहत चार नई मोबाइल मेडिकल यूनिट्स को उपमुख्यमंत्री व चिकित्सा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री बृजेश पाठक ने लखनऊ से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।प्रयागराज, वाराणसी, सोनभद्र और लखनऊ जिलों के वंचित और दूरदराज के इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुंचाने के उद्देश्य से शुरू की गई इस सेवा से अगले तीन वर्षों में करीब 2 लाख लोगों को लाभ पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। इससे पहले यह कार्यक्रम 2021 से वाराणसी, गोरखपुर और बहराइच में संचालित हो रहा है।मोबाइल यूनिटों को प्रशिक्षित डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ, पॉइंट-ऑफ-केयर सेवाओं और आवश्यक जांच सुविधाओं से लैस किया गया है। ये इकाइयाँ पूरी तरह निशुल्क आउटडोर मरीज सेवा (ओपीडी) और दवाएं उपलब्ध कराएंगी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य केवल उपचार प्रदान करना ही नहीं, बल्कि समुदायों में निवारक स्वास्थ्य देखभाल, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल, गैर-संचारी रोगों सहित प्रमुख स्वास्थ्य मुद्दों पर जागरूकता फैलाना भी है।इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने कहा, ₹मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी और सोनभद्र के वंचित क्षेत्रों में अब मोबाइल स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचेंगी। इन यूनिट्स से निःशुल्क परामर्श, जांच और दवाएं मिलेंगी। मैं एमएसडी और स्माइल फाउंडेशन को इस जनकल्याणकारी कार्य के लिए बधाई देता हूं।₹एमएसडी इंडिया के प्रबंध निदेशक रेहान ए. खान ने कहा, ₹एमएसडी का उद्देश्य है कि हर व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच मिले। इस साझेदारी के जरिए हम प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों तक अपनी पहुंच बना पा रहे हैं, जो हमारे मिशन की दिशा में एक अहम उपलब्धि है।₹स्माइल फाउंडेशन के सह-संस्थापक और कार्यकारी ट्रस्टी शांतनु मिश्रा ने इस साझेदारी पर संतोष जताते हुए कहा, ₹स्वास्थ्य सेवा हमारे मिशन का प्रमुख हिस्सा है। हम वर्षों से वंचित समुदायों तक प्रभावी और समय पर इलाज पहुंचाने के लिए काम कर रहे हैं। मोबाइल मेडिकल यूनिट एक सफल मॉडल के रूप में उभरी है और एमएसडी के साथ मिलकर अब हम इस सेवा को और भी दूर तक पहुंचा रहे हैं।₹कार्यक्रम के तहत सामुदायिक जागरूकता सत्र, घर-घर संपर्क, व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रमों के माध्यम से सरकार की जनस्वास्थ्य योजनाओं के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई जाएगी, जिससे लोगों को जेब से खर्च करने की आवश्यकता कम हो और वे समय पर इलाज की ओर प्रवृत्त हों।

मोहनलालगंज में लक्जरी कार से बकरियां चोरी करने वाले दो शातिर चोर गिरफ्तार, चोरी की नकदी और वाहन बरामद

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। थाना मोहनलालगंज क्षेत्र में एक सक्रिय चोर गिरोह का पर्दाफाश किया गया है, जिसमें चार पहिया वाहन का इस्तेमाल कर ग्रामीण इलाकों से बकरियां चोरी की जा रही थीं। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर चोरी की हुई बकरियों की बिक्री से प्राप्त नकदी और चोरी में प्रयुक्त सफेद रंग की स्विफ्ट डिजायर कार बरामद की है।घटना 24 जून की है जब दो ग्रामीणों, विकास कुमार और रामफेर, ने पुलिस को सूचना दी कि उनके गांव ललूमर और डबेरिया भरसंवा से बकरियां चोरी हो गई हैं। इस सूचना पर मोहनलालगंज पुलिस ने तुरंत दो टीमों का गठन कर आसपास के क्षेत्रों और हाईवे पर लगे कैमरों के फुटेज की जांच शुरू की। जांच में पता चला कि चोरी की वारदातों में एक ही कार का इस्तेमाल किया गया है।पुलिस ने 25 जून को आरोपियों को सैय्यद बाबा मोड़ से गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किए गए शारिक अब्बास और सूरज उर्फ भोला ने पूछताछ में चोरी स्वीकार करते हुए बताया कि वे चोरी की बकरियों को हैदरगढ़ बाराबंकी के बाजार में लगभग 17,000 रुपये में बेच चुके हैं और पैसे को आपस में बांट लिया था। पुलिस ने आरोपियों के पास से चोरी की बिक्री की नकदी 7,230 रुपये और चोरी में प्रयुक्त सफेद स्विफ्ट डिजायर कार बरामद की है।पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने एक संगठित गिरोह के रूप में लक्जरी कार का उपयोग कर रात के समय विभिन्न ग्रामीण इलाकों का रुख किया। दिन के वक्त वे गांवों में जाकर घरों के बाहर या सड़कों के किनारे बंधी बकरियों को गुप्त रूप से चिन्हित करते और फिर रात को उन स्थानों से बकरियां चोरी कर लेते। यह गिरोह

लखनऊ के मड़ियांव में गांजा तस्करी का भंडाफोड़, तीन तस्कर गिरफ्तार

लगभग चार किलो गांजा और 70 हजार से अधिक नकद बरामद

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत मड़ियांव थाना पुलिस और अपराध शाखा को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। बुधवार को मड़ियांव थाना क्षेत्र के इंजीनियरिंग कॉलेज चौराहे के पास एक संयुक्त कार्रवाई में पुलिस ने तीन शातिर गांजा तस्करों को गिरफ्तार किया। इनके कब्जे से 3.980 किलोग्राम अवैध गांजा, 70,190 रुपये नकद और तस्करी में प्रयुक्त एक ई-रिक्शा बरामद किया गया।गिरफ्तारी से पहले पुलिस को सूचना मिली थी कि 24 जून को गांजा तस्करी के मामले में गिरफ्तार आरोपियों के तीन अन्य साथी चैतन्य कोचिंग के सामने पार्क में नीले रंग के ई-रिक्शा में बैठे हुए हैं। वे ग्राहक का इंतजार कर रहे हैं और उनके पास अवैध गांजा भी है। इस सूचना पर तत्काल कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम मौके पर पहुंची और हिकमत अमली से तीनों संदिग्धों को दबोच लियागिरफ्तार व्यक्तियों की पहचान बबलू अवस्थी, विनय तिवारी और सतीश कुमार सिंह के रूप में हुई है। बबलू अवस्थी मूल रूप से हरदोई जनपद के अतरौली थाना क्षेत्र के ग्राम नई गढ़ी का निवासी है, जो वर्तमान में लखनऊ के फैजुल्लागंज क्षेत्र में रहता है और रिक्शा चलाता है। दूसरा आरोपी विनय तिवारी कसाईबाड़ा, नौबस्ता, मड़ियांव का निवासी है और चाय की दुकान चलाता है। तीसरा आरोपी सतीश कुमार सिंह भी फैजुल्लागंज का रहने वाला है और रिक्शा चालक के रूप में कार्य करता है।पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे सस्ते दामों में गांजा खरीदकर लखनऊ शहर में अलग-अलग स्थानों पर ऊंचे दामों पर बेचते थे। इससे उन्हें कम समय में अधिक मुनाफा होता था, जिससे वे अपने खर्चे चलाते थे। गिरफ्तार व्यक्तियों के पास से 50 पुड़ियों और तीन पैकेट में कुल 3.980 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद किया गया। साथ ही ₹70,190 नकद और ई-रिक्शा भी जब्त किया गया, जिसका इस्तेमाल वे गांजा की डिलीवरी के लिए करते थे।गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ मड़ियांव थाने में एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/20 के तहत मुकदमा पंजीकृत कर लिया गया है। गिरफ्तारी और तलाशी की प्रक्रिया के दौरान सुप्रीम कोर्ट और मानवाधिकार आयोग के दिशा-निर्देशों का पूर्णतः पालन किया गया। पुलिस अब इनके आपराधिक इतिहास की जानकारी अन्य जनपदों और थानों से भी जुटा रही है।इस पूरी कार्रवाई में थाना मड़ियांव और अपराध शाखा की संयुक्त पुलिस टीम शामिल रही। टीम में उपनिरीक्षक अखिलेश कुमार, शुभम तिवारी, अखिलेश सिंह सहित कई आरक्षी शामिल थे, वहीं अपराध शाखा से उपनिरीक्षक आशुतोष पांडेय, प्रकाश सिंह और आठ अन्य हेड कांस्टेबलों ने अभियान को सफल बनाया।पुलिस की यह कार्रवाई नशे के कारोबार पर लगाम कसने की दिशा में एक और बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। मड़ियांव थाना क्षेत्र में लगातार हो रही तस्करी की घटनाओं को देखते हुए स्थानीय पुलिस अब और सतर्कता बरत रही है।

देखभाल करने वालों की देखभाल विषय पर निहारिका साहित्य मंच की संगोष्ठी सम्पन्न, साहित्यकारों, समाजसेवियों और पत्रकारों को किया गया सम्मानित

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ प्राग नारायण रोड स्थित आईआरएस ऑफिसर्स अपार्टमेंट में बुधवार को निहारिका साहित्य मंच एवं कंट्री ऑफ इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य संगोष्ठी और सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था—₹देखभाल करने वालों की देखभाल₹, जो वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया गया था।कार्यक्रम का शुभारंभ मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्वलन और गीता सक्सेना की मधुर वाणी वंदना से हुआ। चार घंटे तक चली इस परिचर्चा में साहित्यकारों, समाजसेवियों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों ने भाग लिया और बदलते सामाजिक ढांचे, विशेष रूप से संयुक्त परिवारों के टूटने, मोबाइल के दुष्प्रभाव और माता-पिता-बच्चों के रिश्तों की बदलती तस्वीर पर विचार रखे।पत्रकार परवेज़ अख्तर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "शिक्षा, शिष्टाचार और परिवार की बुनियादी बातें पहले भी जरूरी थीं, आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। ज़रूरत केवल इन्हें महसूस करने और व्यवहार में उतारने की है।"कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले अतिथियों को डॉ. रीमा सिन्हा और अब्दुल अज़ीज़ सिद्दीकी द्वारा मोमेंटो एवं मैडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वालों में समाजसेविका सरोज बाला सोनी, रजनी कुमारी, संदीपिका दीक्षित, संध्या श्रीवास्तव, प्रतिभा सिंह, पूजा श्रीवास्तव, उमा लखनवी, गरिमा लखनवी, दीपिका, सुरेखा अग्रवाल, डॉ. तारिका सिंह, गीता सक्सेना, रश्मि सिंह, डॉ. हिमांशु सक्सेना 'अर्श', डॉ. अरविंद रस्तोगी 'धवल', मधु अग्रवाल, पत्रकार आसिफ़ जाफरी, परवेज़ अख्तर, अनवर आलम, मुश्ताक बेग, जमील मलिक, एन. आलम, सैयद ग़ुलाम हुसैन और मुजीब बेग शामिल रहे।कार्यक्रम के समापन पर ट्रस्ट की संस्थापिका डॉ. रीमा सिन्हा और अध्यक्ष अब्दुल अज़ीज़ सिद्दीकी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन समाज को जोड़ने, संवाद की परंपरा को मजबूत करने और संवेदनशील मुद्दों पर चिंतन की राह प्रशस्त करते हैं।

न बंदूक काम आई ना बम, आखिरकार ट्रंप ने मोदी फॉर्मूला के जरिये ही सुलझाया सारा बवाल

ईरान और इजराइल के बीच 12 दिन तक चला युद्ध आखिरकार शांत हो गया है। इससे पहले पिछले महीने भारत और पाकिस्तान के बीच चला सैन्य टकराव भी तीन-चार दिनों में ही थम गया था। मगर इजराइल और हमास के बीच अक्टूबर 2023 से और रूस तथा यूक्रेन के बीच फरवरी 2022 से ही युद्ध जारी है। देखना होगा कि वहां पर कब शांति आती है। वैसे इन सारे संघर्षों का विश्लेषण करेंगे तो एक बात उभर कर सामने आती है कि भारत की नीति पर पूरी दुनिया को अमल करना चाहिए क्योंकि यही स्थायी शांति का सबसे सटीक फॉर्मूला है।

हम आपको बता दें कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुरुआत से कहते रहे हैं कि चाहे यूरोप हो या एशिया, समस्याओं का समाधान युद्ध के मैदानों से नहीं निकल सकता। बातचीत और कूटनीति ही समाधान निकलने का एकमात्र रास्ता है। प्रधानमंत्री मोदी कहते रहे हैं कि यह युद्ध का युग नहीं है। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी साथ ही यह भी कहते हैं कि हम किसी को छेड़ेंगे नहीं और अगर कोई हमको छेड़ेगा तो उसे छोड़ेंगे नहीं, इस नीति के माध्यम से वह पाकिस्तान को उरी हमले, पुलवामा हमले और पहलगाम हमले का करारा जवाब दे चुके हैं। देखा जाये तो दुश्मन को सबक सिखाने का मोदी का जो फॉर्मूला है वह अधिक प्रभावकारी है। हाल ही में जब भारत ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया था तो पाकिस्तान में सिर्फ आतंकी ठिकानों पर ही कार्रवाई की गयी थी। भारत ने अपने बयान में साफ कहा था कि ऑपरेशन सिंदूर के तहत की गई कार्रवाइयां सटीक, लक्षित और गैर-उकसावे वाली थीं। इसका मतलब है कि हमलों को सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध और सीमित रखा गया था और उनका उद्देश्य केवल आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाना था, न कि पाकिस्तान के आम अवाम को नुकसान पहुँचाना था। इसी मोदी मॉडल पर चलते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर लक्षित कार्रवाई करते हुए सिर्फ उसके तीन बड़े परमाणु ठिकानों को ही उड़ाया। इसके अलावा, जिस तरह पाकिस्तान के डीजीएमओ के संघर्षविराम प्रस्ताव को मानते हुए भारत भी शांति के लिए राजी हो गया था उसी प्रकार ट्रंप भी ईरान और इजराइल की ओर से संपर्क किये जाने पर दोनों को युद्धविराम के लिए समझाने में सफल रहे।

देखा जाये तो आज का युग वाकई पूर्ण युद्ध का नहीं है अगर कोई देश किसी अन्य देश की संप्रभुता पर हमला करता है तो उसका जवाब लक्षित कार्रवाई से ही दिया जाना चाहिए क्योंकि पूर्ण युद्ध दोनों पक्षों के लिए तो विनाश लाता ही है साथ ही दुनिया पर भी इसका विपरीत असर पड़ता है। इस समय जो युद्ध दुनिया में चल रहे हैं या जिनमें युद्धविराम हो गया है वह भी यही संदेश दे रहे हैं कि बड़ी शक्तियों को छोटे देशों को हल्के में नहीं लेना चाहिए। उदाहरण के लिए- अमेरिका ने ईरान पर हमला किया तो ईरान ने भी जवाबी कार्रवाई में अमेरिकी सैन्य बेस पर हमला करने की अपनी क्षमता साबित कर दुनिया को अपनी ताकत दिखा दी है। रूस ने यूक्रेन को सप्ताह भर में ही अपना बना लेने का सपना देखा था लेकिन युद्ध को साढ़े तीन वर्ष हो चुके हैं और कोई बड़ी सफलता दोनों पक्षों को अब तक नहीं मिली है। इसी प्रकार इजराइल ने हमास को भले घुटनों के बल ला दिया हो लेकिन अक्टूबर 2023 से अब तक निरंतर किये जा रहे हमलों के बावजूद वह गाजा पर पूरी तरह कब्जा नहीं कर सका है और अपने कई बंधकों को भी हमास की कैद से नहीं छुड़ा सका है। इसी प्रकार भारत ने भले ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान को कड़ा सबक सिखाया हो लेकिन पाकिस्तान ने तुर्की, चीन और अजरबैजान जैसे अपने सहयोगियों से मिली मदद की बदौलत पलटवार करने की हिम्मत दिखाई।

बहरहाल, उक्त उदाहरणों को देखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि विश्व में शांति के लिए सब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बात मानें और युद्ध के मैदान से नहीं बल्कि वार्ता की टेबल पर मुद्दों का हल निकालें। इसमें कोई दो राय नहीं कि दुनिया में स्थायी शांति का अगर कोई फॉर्मूला है तो वह मोदी फॉर्मूला ही है जिस पर अब ट्रंप भी चलने लगे हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि अन्य लोग भी इसी राह पर चलेंगे।

आपातकाल: आधी रात जब छिन गए थे जनता के सारे अधिकार

इंदिरा गांधी की सरकार ने अपने राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाल दिया, मीडिया की आजादी छीन ली, लोगों के मौलिक अधिकारों को रौंदा, मानवाधिकारों का उल्लंघन किया और आम नागरिकों को बेरहमी से प्रताड़ित किया गया और हत्या तक की गई।

डॉ. आशीष वशिष्ठ

50 वर्ष पूर्व 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भारतीय संविधान की धारा 352 के अधीन देश में आपातकाल की घोषणा कर दी। पूरा देश इस फैसले से भौंचक रह गया। भारतीय इतिहास में लोकतंत्र का काला दिन था। आपातकाल लगाया गया, जो मार्च 1977 तक चला। इस दौरान भारत में लोकतंत्र लगभग खत्म कर दिया गया और एक तानाशाही शासन की शुरुआत इस दौरान नागरिक अधिकारों का बड़े पैमाने पर हनन हुआ था। इंदिरा गांधी की सरकार ने अपने राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाल दिया, मीडिया की आजादी छीन ली, लोगों के मौलिक अधिकारों को रौंदा, मानवाधिकारों का उल्लंघन किया और आम नागरिकों को बेरहमी से प्रताड़ित किया गया और हत्या तक की गई। इस दौर में संविधान को भी कमजोर किया गया। हालांकि, आपातकाल का हर पहलू चौंकाने वाला था, लेकिन खासकर छात्रों पर किए गए अत्याचार बेहद निंदनीय थे। सब कुछ सिर्फ एक परिवार की तानाशाही को बरकरार रखने के लिए। पहली बार ऐसा मौका था जब देश में अनुच्छेद 352 के तहत आपातकाल की घोषणा की गई थी। लोगों को आपातकाल के मतलब भी नहीं पता था। आपातकाल की घोषणा के साथ ही आम जनता के सभी मौलिक अधिकार छीन लिए गए थे। किसी तरह की अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार ही नहीं, लोगों के पास जीवन का अधिकार भी नहीं रह गया था। आम जनता, मीडिया समूह, रेडियो, और अन्य प्रचार के माध्यमों पर पूरी पाबंदी लगा दी गई थी। आपातकाल की घोषणा के कुछ घंटे के भीतर की प्रमुख समाचार पत्रों के कार्यालयों में बिजली की आपूर्ति काट दी गई थी।

आपातकाल की सूचना के बाद से ही देश में ढूंढ-ढूंढ कर विपक्ष के नेताओं की गिरफ्तारियों का दौर शुरू हो गया था। तत्कालीन समय के बड़े नेता जयप्रकाश नारायण, लालकृष्ण आडवाणी, अटल बिहारी वाजपेयी, जॉर्ज फर्नांडिस को जेल में डाल दिया गया। विपक्षी नेताओं के साथ साथ समाज में प्रभाव रखने वाले कांग्रेस के विपरीत विचारधारा वाले सभी लोगों और आम जनता में बेगुनाहों को भी जेल में भर दिया गया था, जेलों में जगह नहीं बची थी। करीब 1,40,000 लोगों आपातकाल में बिना किसी सुनवाई के राजनीतिक बंदी बनाया गया। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आपातकाल के दौरान पूरे देश का नियंत्रण गांधी-नेहरू परिवार के हाथ में था। कांग्रेस ने आपातकाल की आड़ में वो सभी काम किए जो ना सिर्फ राजनीतिक लिहाज से अशोभनीय थे बल्कि अमानवीय भी थे। प्रेस में सरकार या आपातकाल की आलोचना करना अपराध की श्रेणी में आ चुका था। प्रेस-मीडिया पर भी सेंसरशिप लगा दी गई थी। हर अखबार में सेंसर अधिकारी तैनात किया गया था। हालात यह थे कि कांग्रेस समर्थित उस अधिकारी के अनुमति के बाद ही कोई समाचार छप सकता था। सरकार विरोधी समाचार छापने पर बिना किसी सुनवाई के गिरफ्तारी हो रही थी।

यही नहीं, कांग्रेस का विरोध करने वाले 26 संगठनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। 4 जुलाई 1975 को राष्ट्रीय विचार और भारतीयता के लिए काम करने वाले संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। आपातकाल के मुखर आलोचक रहे फिल्मी कलाकारों को भी इसका दंश झेलना पड़ा। किशोर कुमार के गानों को रेडियो और दूरदर्शन पर बजाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। देव आनंद को भी अनौपचारिक प्रतिबंध का सामना करना पड़ा था। देश में आपातकाल लागू होने के बाद कई त्रासद घटनाएं हुईं। दिल्ली का तुर्कमान गेट कांड भी इनमें एक था। मुस्लिम बहुल उस इलाके को संजय गांधी ने दिल्ली के सौंदर्यीकरण के नाम पर खाली करा दिया। यह काम लोगों की सहमति से नहीं, बल्कि जबरन किया गया गया। बुल्डोजर से लोगों के घर ढहाए गए। जिन्होंने विरोध किया, उन्हें जेलों में ठूंस दिया गया। विरोध के दौरान पुलिस ने लाठियां बरसाईं और आंसू गैस के गोले छोड़े। पुलिस ने गोलियां भी चलाईं। चार लोगों की जान चली गई।

संजय गांधी की सनक के चलते सड़क से भिखारियों, झोपड़पट्टी के लोगों और राहगीरों को पकड़ कर जबरन नसबंदी के टार्गेट पूरे किए जाने लगे। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में 18 अक्टूबर 1976 को नसबंदी अभियान का विरोध कर रहे आंदोलनकारियों पर पुलिस ने सीधी फायरिंग कर दी थी। जिसमें 42 बेगुनाहों की मौत हो गई थी। मृतकों की स्मृति में यहां शहीद चौक बना हुआ है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इमरजेंसी के दौरान देशभर में 1 करोड़ 10 लाख से ज्यादा लोगों की नसबंदी कर दी गई थी। 21 महीने के बाद जयप्रकाश का आंदोलन निर्णायक मुकाम तक जा पहुंचा। इंदिरा गांधी को सिंहासन छोड़ना पड़ा। मोरारजी देसाई की सरकार ने 28 मई 1977 में आपातकाल के दौरान हुए ज्यादतियों को जानने के लिए जस्टिस जे सी शाह की अध्यक्षता में शाह कमीशन गठित किया। शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया था कि जिस वक्त आपातकाल की घोषणा की गई उस वक्त ना देश में आर्थिक हालात खराब थे और ना ही कानून व्यवस्था में किसी तरह की कोई अड़चन थी। इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल अपनी इच्छा के अनुसार लगाया था और इस संबंध में उन्होंने अपने पार्टी के कुछ लोगों को छोड़कर किसी भी सहयोगी से कोई विमर्श नहीं किया था।

आपातकाल में गिरफ्तार किए गए अधिकतर सम्मानित और बुजुर्ग नेताओं को चिकित्सा सुविधा की आवश्यकता थी, जो उन्हें अस्पताल में मौजूद नहीं कराई गई। इंदिरा गांधी की तानाशाही का एक नमूना इस बात से भी पता चलता है कि शाह आयोग ने नसबंदी कार्यक्रम पर सरकार के रवैए की बेहद आलोचना की थी। आयोग ने कहा था कि पटरी पर रहने वाले और भिखारियों की जबरदस्ती नसबंदी की गई इसके साथ-ऑटो रिक्शा चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस के नवीनीकरण के लिए नसबंदी सर्टिफिकेट दिखाना अनिवार्य कर दिया गया था। आयोग ने यह स्पष्ट रूप से माना था कि सरकारी तंत्र का उपयोग कर कुछ लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए इस पूरे आपातकाल का इस्तेमाल किया गया। जनवरी 2011 में सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान यह स्वीकार किया कि वर्ष 1975 में आपातकाल के समय नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन हुआ था। तत्कालीन अटॉर्नी जनरल नीरेन डे ने तब सुप्रीम कोर्ट में यह कबूल किया था कि जीने का अधिकार स्थगित है। आपातकाल के दौरान प्रेस की स्थिति को लेकर एक श्वेत पत्र 1 अगस्त 1977 में संसद में पेश किया गया। सत्या सी पेज के श्वेत पत्र से यह स्पष्ट हुआ कि तानाशाही की इच्छा रखने वाली इंदिरा गांधी ने अपनी अध्यक्षता में तय किया था कि प्रेस काउंसिल को भंग कर दिया जाए और तत्कालीन चारों समाचार एजेंसियों को मिलाकर एक कर दिया जाए, जिससे उन्हें सेंसर करने और संभालने में आसानी होगी। राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी के जो नेता पिछले कुछ समय अक्सर लोकतंत्र बचाने की बात कर रहे हैं। संसद से सड़क तक वे संविधान की किताब लेकर घूमते हैं, उन्हें याद दिलाना जरूरी है कि उनकी पार्टी के नेता ने दादागिरी करके इस देश पर 21 महीने आपातकाल लगाकर लोगों को जेल में ठूंस दिया था।

अजब-गजब

52 साल से शख्स की आंत में फंसी थी ये खतरनाक चीज, फिर भी रहा जिंदा, डॉक्टर भी रह गए हैरान

चीन से एक बेहद चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक 64 वर्षीय व्यक्ति की आंत से 17 सेंटीमीटर का टूथब्रश (Toothbrush In Intestine) निकाला गया, जो पिछले 52 सालों से उसके शरीर में फंसा हुआ था। यह बुजुर्ग पेट दर्द की तकलीफ के बाद अस्पताल में भर्ती हुआ था, लेकिन जांच रिपोर्ट देखकर डॉक्टर्स हैरान रह गए।

यांग नाम का यह मरीज पूर्वी चीन के अनहुई प्रांत का रहने वाला है। बुजुर्ग ने खुलासा किया कि उसने 12 साल की उम्र में यह टूथब्रश निगल लिया था। लेकिन अपने माता-पिता की डांट से बचने के लिए उनसे यह बात छिपा ली। यांग का मानना था टूथब्रश समय के साथ खुद ब खुद खुल जाएगा, और उसने दशकों तक सामान्य जीवन जिया, जिसमें उसे कोई परेशानी नहीं हुई।

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, डॉक्टरों ने एंडोस्कोपिक सर्जरी की और 80 मिनट में टूथब्रश को सफलतापूर्वक आंत से निकाल दिया। डॉक्टरों ने बताया कि पिछले तीन वर्षों में यह अस्पताल में किसी मरीज के पाचन तंत्र से कोई वस्तु निकालने का सबसे लंबा ऑपरेशन था।

मेडिकल एक्सपर्ट्स के अनुसार, टूथब्रश के कारण मरीज की आंत में छेद हो सकता था, जो उसकी जिंदगी के लिए घातक साबित हो सकता था। किस्मत से यांग के मामले में टूथब्रश आंत के एक मोड़ में आकर फंस गया था, जो दशकों तक हिल नहीं पाया, और उसे गंभीर जटिलताओं से बचाए रखा।

इस खबर ने सोशल मीडिया पर नेटिजन्स को हैरान कर दिया है। लोग यांग को भाग्यशाली बता रहे हैं कि वह बिना किसी परेशानी के पांच दशकों तक जीवित रहे।

इससे पहले 2019 में ग्वांगडोंग प्रांत से एक ऐसी ही घटना सामने आई थी, जहां एक 51 वर्षीय मरीज की आंत से 14 सेंटीमीटर का टूथब्रश निकाला गया था। शख्स ने आत्महत्या के इरादे से उसे 20 साल पहले निगला था।

ब्लॉग

50 साल पहले इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने निर्ममता के साथ की थी संविधान की हत्या

नीरज कुमार दुबे

देश 25 जून, 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा भारत में लगाए गए आपातकाल की 50वीं बरसी मना रहा है। मोदी सरकार आपातकाल की अवधि के दौरान अमानवीय पीड़ा झेलने वालों के व्यापक योगदान को याद करने के लिये आज के दिन को संविधान हत्या दिवस के रूप में मना रही है तो दूसरी ओर राजनेता हों या मीडियाकर्मी अथवा सामान्य जन, सभी उस दौर को याद कर कांग्रेस को कोस रहे हैं क्योंकि वह देश की सरकार द्वारा अपनी ही जनता पर किये गये अत्याचार की निर्मम पराकाष्ठा थी। उस समय देश में एक लाख से ज्यादा लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया था। देश के जितने भी बड़े विपक्षी नेता थे, सभी के सभी सलाखों के पीछे डाल दिए गए थे। राजनीतिक बंदियों की अपने परिवारों से मुलाकात तक पर पाबंदी लगा दी गई थी। नेता ही नहीं अदालतें भी एक तरह से कैद हो चुकी थीं। किसी को जमानत नहीं दी जा रही थी और मानव अधिकारों के उल्लंघन पर स्वतः संज्ञान नहीं लिया जा रहा था। राजनीतिक कार्यकर्ता जेल में मानसिक-शारीरिक यातनाएं सह रहे थे। पुलिस हिरासत और जेलों में मौत हो रही थीं लेकिन कहीं कोई सुनने वाला नहीं था।

हम आपको बता दें कि देश में आपातकाल के 1975 में आधिकारिक रूप से लागू होने से पहले, ग्रामीण इलाकों में छोटे बच्चे अक्सर बिना कपड़ों के बेफिक्री से दौड़ते-भागते नजर आते थे। लेकिन आपातकाल के दौरान हालात इतने भयावह हो गए थे कि लोगों ने मासूम बच्चों को भी कपड़े पहनाने शुरू कर दिए थे, यह शालीनता की भावना से नहीं हो रहा था बल्कि जबरन नसबंदी की आशंका से उपजा डर था, जिसने पूरे समाज को जकड़ लिया था। सामूहिक नसबंदी अभियान की यादें आज भी जीवित बचे पीड़ितों को परेशान करती हैं क्योंकि कई लोगों की नसबंदी जबरदस्ती की गई थी। अकेले 1976 में, पूरे भारत में 80 लाख से अधिक लोगों की नसबंदी की गई थी। इनमें से ज्यादातर पुरुष थे, जिनमें से कई लोगों की नसबंदी स्वैच्छिक नहीं थी। हम आपको बता दें कि 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी तानाशाह इसलिए बन गयी थीं और देश पर आपातकाल इसलिए थोप दिया था क्योंकि एक पुराना मामला राजनीतिक रूप से उनके लिए बड़ी मुश्किलों का सबब बन गया था। दरअसल 1971 में हुए लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी ने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी राज नारायण को रायबरेली संसदीय क्षेत्र में पराजित किया था। लेकिन चुनाव परिणाम आने के चार साल बाद राज नारायण ने हाईकोर्ट में चुनाव परिणाम को चुनौती दी। उन्होंने दलील दी थी कि इंदिरा गांधी ने चुनाव में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया, चुनाव में तय सीमा से अधिक पैसे खर्च किए और मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए ग़लत तरीकों का इस्तेमाल किया। मामले पर सुनवाई करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 12 जून 1975 को इंदिरा गांधी को आरोपों में दोषी पाया और छह साल के लिए पद से बेदखल कर दिया तथा इंदिरा गांधी के चिर प्रतिद्वंद्वी राज नारायण सिंह को चुनाव में विजयी घोषित कर दिया था। अदालत के इस फैसले ने देश में बड़ा राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया था। इंदिरा गांधी ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दे डाली थी। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश को बरकरार रखा, हालांकि इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बने रहने की इजाजत दे दी। इस फैसले से विपक्ष में जहां नया जोश आ गया वहीं इंदिरा गांधी बौखला गयी थीं। अपने खिलाफ विपक्ष की एकजुटता और विरोध प्रदर्शन बढ़ते देख इंदिरा गांधी ने 25-26 जून की रात को आपातकाल लगाने का फैसला किया और रात्रि को ही राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद के दस्तखत के साथ भारत में आपातकाल लागू हो गया। अगली सुबह समूचे देश ने रेडियो पर इंदिरा गांधी की आवाज में संदेश सुना कि भाइयों और बहनों, राष्ट्रपति जी ने आपातकाल की घोषणा की है। लेकिन इससे सामान्य लोगों को डरने की जरूरत नहीं है। लोगों को आपातकाल का मतलब तब समझ आया जब उन्हें पता चला कि उनके सभी मौलिक अधिकारों को स्थगित कर दिया गया है। इसके साथ ही सरकार विरोधी भाषणों और किसी भी प्रकार के प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। इससे जनता नाराज हुई और सड़कों पर उतरने लगी लेकिन सड़क पर उतरने वाले हर शख्स को जेलों में ठूंस दिया गया था।

हम आपको बता दें कि आपातकाल के दौरान तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार ने देश में कुल 48 अध्यादेश लागू किए थे जिसमें आंतरिक सुरक्षा कानून अधिनियम (मीसा) में संशोधन के लिए लाए गए पांच अध्यादेश भी शामिल थे। प्रशासन को बिना किसी वारंट के किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करने का अधिकार देने वाले इस कानून को अक्सर 'दमनकारी' कानून की संज्ञा दी जाती है। पचास वर्ष पहले 25 जून 1975 को लगाया गया आपातकाल 21 महीने जारी और इस दौरान सरकार ने कई बार संविधान में बदलाव किए जिसमें राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव को न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र से बाहर रखा गया तथा संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी', 'धर्मनिरपेक्ष' और 'अखंडता' जैसे शब्द जोड़े गए। विभिन्न कानूनों में संशोधनों से सत्ता संतुलन केंद्र सरकार के पक्ष में हो गया और न्यायपालिका की शक्तियों में कटौती कर दी गई। देश में आपाताकाल लागू होने पर कुछ ही दिनों के भीतर 29 जून 1975 को सरकार ने मीसा में बदलाव करने के लिए पहला अध्यादेश जारी किया था। आपातकाल के दौरान मीसा (संशोधन) अध्यादेश को और चार बार लागू किया गया तथा संसद द्वारा उसे मंजूरी दे दी गई। अगले ही दिन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने एक अध्यादेश भारत रक्षा अधिनियम (संशोधन) लागू किया, जिससे सरकार को देश में शांति और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए ज्यादा शक्तियां मिल गईं। आपातकाल के दौरान संसद के संक्षिप्त सत्र आयोजित किए गए। विपक्ष के कई नेता सलाखों के पीछे थे और कांग्रेस ने अपने प्रचंड बहुमत का इस्तेमाल करते हुए कई अध्यादेशों पर संसदीय मोहर लगवाने के लिए मसौदा विधेयक को पारित कर दिया गया था।

उस दौर के बारे में भाजपा नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल ने बताया कि जब आपातकाल घोषित किया गया तो कुछ पुलिसकर्मियों ने रात में हमारे दरवाजे पर दस्तक दी। जब वे मेरे पिता को गिरफ्तार करने आए, तो हमने सोचा कि ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि वे (इंदिरा) गांधी और कांग्रेस के खिलाफ विरोध प्रदर्शन में शामिल थे। हमने सोचा कि वे उन्हें गिरफ्तार करेंगे और कुछ दिनों में रिहा कर देंगे। लेकिन अगली सुबह उन्हें पता चला कि देश में आपातकाल लगा दिया गया है। उस समय दिवंगत अरुण जेटली दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष थे। विजय गोयल ने कहा कि वरिष्ठ पत्रकार रजत शर्मा और वह दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित विरोध प्रदर्शनों में शामिल रहे थे। विजय गोयल ने उस दौर को याद करते हुए बताया कि वह किस तरह पुलिस से बचने के लिए छतों से कूदकर भाग रहे थे। कैसे लोगों को जेलों में प्रताड़ित किया गया। उन्होंने बताया कि वे लगातार अपना ठिकाना बदलते रहते थे और अक्सर पुलिस से बचने के लिए खुले में सोते थे। उन्होंने बताया कि अंत में पार्टी नेताओं ने भूमिगत गतिविधियों में शामिल लोगों को समर्पण करने की सलाह दी। उस समय तक रजत शर्मा पहले ही गिरफ्तार हो चुके थे, उन्हें पीटा गया लेकिन रजत शर्मा ने विजय गोयल के ठिकाने को लेकर जुबान नहीं खोली।

विजय गोयल ने बताया कि कैदी अक्सर खराब भोजन को लेकर थालियां बजा बजाकर विरोध जताते थे और इसके लिए उन्हें पीटा जाता था। बीमार कैदियों को पैरोल नहीं दी गई। लेकिन पुलिस स्टेशन में जेलों के मुकाबले कहीं ज्यादा प्रताड़ना दी जाती थी। लेकिन ऐसे माहौल में भी हौंसले बुलंद रखने के लिए कैदियों द्वारा कविता पाठ, पेंटिंग और बैडमिंटन प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती थीं। उन्होंने बताया कि आपातकाल ने ना जाने कितनी जिंदगियों को तबाह कर दिया। लोगों को भयानक तरीके से प्रताड़ित किया जाता था। उनके बाल और नाखून खींचे जाते थे, बर्फ की सिल्लियों पर लिटाया जाता, महिलाओं को भी यातनाएं दी जाती थीं। वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के पूर्व प्रचारक और राजनीतिक विचारक केएन गोविंदाचार्य ने आपातकाल को 'अशुभ' करार देते हुए कहा कि इस दौरान आरएसएस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। भाजपा के पूर्व पदाधिकारी ने कहा कि संघ परिवार ने उस आंदोलन को स्थिरता दी। उन्होंने कहा, ''समुद्र मंथन के दौरान संतुलन कायम रखने के लिए जिस प्रकार कूर्म ने बासुकी नाग और मंदराचल पर्वत के साथ एक भूमिका अदा की, आपातकाल में वही भूमिका संघ की थी।'' वहीं उस दौर में मीडिया की भूमिका को देखें तो समाचार पत्रों पर सेंसरशिप, पत्रकारों की गिरफ्तारी और समाचार एजेंसियों का विलय, ऐसे ही कुछ तरीकों से इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार ने आपातकाल के 21 महीनों के दौरान सार्वजनिक विमर्श को नियंत्रित करने की कोशिश की थी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, आपातकाल के दौरान, सरकार के हिसाब से काम करने से इंकार करने वाले 200 से अधिक पत्रकारों को विपक्षी नेताओं के साथ जेल में डाल दिया गया था। इसके साथ ही सरकार ने चार समाचार एजेंसियों- प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान समाचार और समाचार भारती का विलय करके एक समाचार एजेंसी 'समाचार' बना दी थी। उस समय समाचार रिपोर्टिंग पर कड़ी निगरानी रहती थी और पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी) में तैनात एक आईपीएस अधिकारी ने यह सुनिश्चित किया कि अखबारों में सरकार के पक्ष में ही खबरें पहुंचें। पत्रकारों को संजय गांधी और पुरुषों की जबरन नसबंदी से जुड़े उनके परिवार नियोजन कार्यक्रम की प्रशंसा करने तथा विपक्ष से संबंधित खबरों को कुछ पैराग्राफ में समेटने के लिए मजबूर किया जाता था। वरिष्ठ पत्रकार एस वेंकट नारायण आपातकाल के दौरान 'ऑनलुकर' पत्रिका के संपादक थे। उन्होंने बताया कि कैसे उन्हें जो कुछ भी प्रकाशित करना होता था, उसकी पांडुलिपि पीआईबी में मुख्य सेंसर अधिकारी हैरी डी'पेन्हा के पास मंजूरी के लिए भेजनी पड़ती थी। इंडियन एक्सप्रेस के कुलदीप नैयर और 'द मदरलैंड' के केआर मलकानी सहित संपादकों को समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण के प्रति सहानुभूति रखने वाली खबरें तथा इंदिरा गांधी और उनके बेटे संजय पर सनसनीखेज खबरें प्रकाशित करने के लिए गिरफ्तार किया गया था। महात्मा गांधी द्वारा स्थापित नवजीवन प्रेस की मुद्रण सुविधाएं रोक ली गई थीं जबकि महात्मा गांधी के पौत्र राजमोहन गांधी द्वारा संपादित साप्ताहिक 'हिम्मत' को कुछ आपत्तिजनक खबरों के कारण काफी राशि जमा करने के लिए कहा गया था।

प्लास से खींचे नाखून, मार-मारकर तोड़ दिए थे 7 डंडे, मैं तड़पता रहा... इमरजेंसी में बरेली के अटल को मिली थी ऐसी सजा

आर्यावर्त संवाददाता

बरेली। 25 जून 1975 की आधी रात को जब देश सो रहा था. तब लोकतंत्र को जंजीरों में जकड़ लिया गया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपने राजनीतिक हितों को बचाने के लिए पूरे देश पर आपातकाल थोप दिया। हर आवाज को कुचला गया। हर विरोधी जेल में डाला गया। जेल जाने वालों में एक उत्तर प्रदेश के बरेली के वीरेंद्र अटल भी थे, जिन्होंने उस दौर में भी सच बोलने की हिम्मत दिखाई।

28 अक्टूबर 1975 की शाम का वक्त था। जब बरेली कोतवाली पुलिस वीरेंद्र अटल के घर पहुंची। रिवॉल्वर ताने इंस्पेक्टर हाकिम राय और उनकी टीम ने वीरेंद्र अटल को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें बरेली कोतवाली ले जाया गया और फिर अगली सुबह डीएम माता प्रसाद के

सामने सीओ ऑफिस में पेश किया गया। अटल ने बताया कि मेरे हाथों से खून बह रहा था। मार-मारकर मुझ पर 7 डंडे तोड़ दिए गए थे। फिर प्लास से मेरे नाखून खींचे गए। मैं दर्द से तड़पता रहा, लेकिन पुलिस ने रहम नहीं किया। कोर्ट तक पैदल चलाया गया। आज भी यह सब याद करते हुए वीरेंद्र अटल की आंखें भर आती हैं।

दीवारों पर लिखा इंकलाब

वीरेंद्र अटल और उनके 10 साथियों ने इमरजेंसी के खिलाफ बरेली के हर थाने और प्रशासनिक दफ्तर की दीवारों पर तानाशाही हटाओ, लोकतंत्र बचाओ जैसे नारे लिखे। उन्होंने पोस्टर लगाए और रात-रात भर दीवारों पर संदेश लिखे। एक बैठक में 11 लोगों ने खून से संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर किए कि चाहे कुछ भी हो जाए, तानाशाही का खात्मा करेंगे। वीरेंद्र अटल कहते हैं कि गांधीवादी नहीं, मैं क्रांति में विश्वास रखता हूं। वीरेंद्र अटल खुद को गांधीवादी नहीं मानते। वे साफ कहते हैं, 'मैं अहिंसा का पुजारी नहीं हूं। मुझे लगता है कि भारत को आजादी क्रांति से मिली, न कि सिर्फ अहिंसा से। बचपन से मैं संघ का स्वयंसेवक रहा हूं। पूज्य गुरुजी ने कहा था जिसे तुम लगातार निहारते हो, वह विचार बन जाता है। इस वाक्य ने मेरी सोच को दिशा दी।' उनका ये साफ नजरिया ही था, जो उन्हें झुकने नहीं देता था।

न कोई वकील और न कोई सुनवाई

वीरेंद्र अटल को कोर्ट से पहली बार बरी कर दिया गया। लेकिन तीन दिन बाद ही उन पर मीसा (MISA) लगा दी गई और दोबारा जेल भेज दिया गया। आठ दिन बाद उनके घर की कुर्की हो गई। उनके एक साथी ने जुर्म कबूल कर लिया और जुर्माना देकर बाहर आ गया। लेकिन अटल डटे रहे। अटल ने बताया कि मैंने कहा, 'मैं जुर्म कबूल नहीं करूंगा। सच कहने की कीमत चुकानी पड़े तो मंजूर है। 9 महीने जेल में रहे और फिर बाइज्जत बरी हुए।'

सर्टिफिकेट नहीं, देश का सम्मान चाहिए

अब 50 साल बीत चुके हैं। लोकतंत्र आज मजबूत दिखता है। लेकिन वीरेंद्र अटल की अपील है जो लोग उस दौर में लड़े, जेल गए, खून बहाया। उन्हें सिर्फ एक प्रमाणपत्र नहीं, स्वतंत्रता सेनानी जैसा सम्मान मिलना चाहिए। आज जब देश इमरजेंसी की बरसी मना रहा है, तब हमें बरेली के वीरेंद्र अटल जैसे लोगों को याद करना चाहिए। जिनके संघर्ष की कहानी की कोई किताब नहीं है और न कोई ही सिलेबस में जिक्र है। लेकिन उन्होंने सच के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा दी। लोकतंत्र सिर्फ वोट डालने का हक नहीं, ये उस साहस का नाम है।

चौधरी बेचेलाल महाविद्यालय परिसर में होगा मार्कड्रिल आयोजन

» क्षेत्र में बाढ सहित अन्य प्रकार की आपदाओं से बचाव का रिहर्सल

आर्यावर्त संवाददाता

धौरहरा-खीरी। तराई क्षेत्र में बाढ व अन्य प्रकार की आपदाओ/घटनाओं से निपटने हेतु गुरुवार को प्रशासनिक अफसरों की टीम द्वारा चौधरी बेचेलाल महाविद्यालय रसूलपुर में मार्क ड्रिल का आयोजन अल सुबह होगा। जिसमे जिला स्तर से लेकर तहसील मुख्यालय के समस्त विभागों के जिम्मेदारो की मौजूदगी होगी।

प्राप्त सूचना के अनुसार गुरुवार को तराई क्षेत्र के चौधरी बेचेलाल महाविद्यालय रसूलपुर में विभिन्न प्रकार की आपदाओं से बचाव को लेकर मार्कड्रिल का आयोजन जिला प्रशासन के निर्देश पर सुबह 8--10 के बीच तहसील प्रशासन कर रहा है। कार्यक्रम में आपदा मित्र,नेहरू युवा केन्द्र,भारत स्काउट गाइड,एन सी सी कैडेट,रेडक्रास सोसायटी,के सदस्यों के साथ फ्लड पीएसी, अग्निशमन विभाग मय वाहन, अस्थाई चिकित्सालय कैम्प जैसे बचाव व राहत शिविरों की मौजूदगी होगी।

प्रशासनिक अफसरों के अनुसार रिहर्सल में रैनी गांव के किनारे शारदा नदी पर बने बांध को टूटने जैसी घटना के संबंध में दो बसों से आपदा मित्रों द्वारा बच्चों,बुजुर्गो, गर्भवती महिलाओं व अन्य को राहत शिविर तक लाने जैसी घटना की रिहर्सल जाएगी। मार्क ड्रिल के दौरान एडीएम खीरी, एसडीएम, तहसीलदार, पुलिस क्षेत्राधिकारी, नायब तहसीलदार गण, ईसानगर, धौरहरा, रमियाबेहड़ के खण्ड विकास अधिकारी, ईसानगर धौरहरा खमरिया के थाना प्रभारी गणो के साथ बिजली विभाग राजस्व निरीक्षक लेखपाल व अन्य की मौजूदगी होगी।

कानपुर का सबसे शातिर अपराधी हुआ लंगड़ा, शाहिद पिच्चा पर हैं 43 से ज्यादा केस

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। कुख्यात हिस्ट्रीशीटर और कानपुर के सबसे शातिर अपराधी शाहिद पिच्चा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। कानपुर शहर के चमनगंज और अनवरगंज थाना क्षेत्रों की संयुक्त पुलिस टीम ने मंगलवार देर रात मुठभेड़ में शाहिद पिच्चा की गिरफ्तारी में सफलता हासिल की। इस मुठभेड़ के दौरान शाहिद के पैर में गोली लगी, जिसके बाद उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया।

पुलिस के अनुसार, शाहिद पर शहर के विभिन्न थानों में 43 से अधिक गंभीर धाराओं में मुकदमे दर्ज हैं। वह 25 हजार रुपये का इनामी अपराधी है। शाहिद को शहर का सबसे शातिर अपराधी माना जाता है। डीसीपी श्रवण कुमार सिंह ने बताया कि शाहिद शहर का सबसे शातिर अपराधी है। इसकी पुलिस को काफी

दिनों से तलाश थी और पुलिस ने कानपुर से लेकर मुंबई तक इसके लिए जाल बिछा रखा था।

तीन दिन से पुलिस को मुखबिरों द्वारा सूचना मिली कि शाहिद कानपुर के अपने घर में है लेकिन निकल नहीं रहा है। इसके बाद पुलिस की टीम ने बुधवार तड़के सुबह उसके घर पर छापा मारा तो शाहिद पुलिस पर फायरिंग करते हुए भागा। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने भी गोली चलाई, जिसमें शाहिद के पैर में गोली लगी और वह मौके पर ही गिर पड़ा। पुलिस ने घायल होने के बाद शहीद को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया उसके बाद शाहिद को जेल भेज दिया जाएगा।

सिरदर्द बना हुआ था शाहिद

शाहिद पिच्चा लंबे समय से कानपुर पुलिस के लिए सिरदर्द बना हुआ था। उस पर हत्या, लूट, डकैती और अन्य संगीन अपराधों के कई मामले दर्ज हैं। पुलिस ने उसके कब्जे से एक पिस्तौल, कारतूस और अन्य आपत्तिजनक सामग्री बरामद की है। पूछताछ में शाहिद ने कई बड़ी वारदातों में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है।

डीसीपी श्रवण कुमार सिंह ने बताया कि शाहिद का आपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है और उसके सहयोगियों की तलाश में छापेमारी की जा रही है। इसके साथ ही गिरफ्तार करने वाली टीम को इनाम भी दिया जाएगा।

दहेज हत्या के आरोपी को जेल

मीरजापुर। थाना अदलहाट पुलिस ने दहेज हत्या के आरोपी को गिरफ्तार किया है। थाना अदलहाट पर गत 17 जून 2025 को वादी दशमी पटेल पुत्र छैवर निवासी नीबूपुर थाना अलीनगर जनपद चन्दौली द्वारा नामजद अभियुक्तों के विरूद्ध वादी की पुत्री की दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित करने एवं जान से मार देने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गई। उक्त के सम्बन्ध में प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना अदलहाट पर मु अ सं -194/2025 धारा 80(2), 85 बीएनएस व ¾ डीपी एक्ट पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई। सोमेन बर्मा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा उक्त घटना को गंभीरता पूर्वक लेते हुए महिला सम्बन्धित अपराध में त्वरित कार्यवाही करते हुए अभियुक्तों की यथाशीघ्र गिरफ्तारी हेतु क्षेत्राधिकारी चुनार के नेतृत्व में प्रभारी थाना अदलहाट को निर्देश दिये गये।इसी क्रम में उप निरीक्षक रणजीत सिंह मय पुलिस टीम द्वारा प्राप्त मुखबिर की सूचना के आधार पर अभियुक्त आनन्द सिंह पुत्र नरसिंह निवासी पशुरामपुर थाना अदलहाट जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

वाराणसी–दिल्ली वंदे भारत में यात्री के ऊपर बहने लगा झरना, भीग गई पूरी सीट

आर्यावर्त संवाददाता

वाराणसी। वंदे भारत एक्सप्रेस बहुत अच्छी ट्रेन बताई जाती है। यात्री इस ट्रेन में टिकट बुक करके सफर करते हैं, ताकि उनकी यात्रा आरामदायक और सुविधाजनक हो सके। इस सेमी हाई स्पीड ट्रेन की चर्चा अक्सर ही की जाती है। ये ट्रेन बहुत ही ज्यादा सुर्खियों में भी रहती है। एक बार फिर ये ट्रेन सुर्खियों में है। जो वंदे भारत सुर्खियों में है वो वाराणसी से नई दिल्ली रोज सुबह छह बजे चलती है।

इसके सुर्खियों में रहने का कारण ट्रेन की एक कोच में बारिश के पानी का गिरना है। बताया जा रहा है कि वाराणसी से नई दिल्ली के लिए जा रही वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेन में C7 कोच में बारिश का पानी गिरने लगा। इस दौरान ट्रेन में लगा एसी भी काम नहीं किया। यात्रियों ने इसकी शिकायत रेल मदद से भी की, लेकिन उनको किसी प्रकार की सहायता नहीं दी गई। यात्रियों ने दिल्ली तक ऐसे ही

सफर किया।

सेमी हाई-स्पीड ट्रेन में सामने आ रहीं खामियां

यात्रियों ने कहा कि भारत की पहली सेमी हाई-स्पीड ट्रेन में लगातार खामियां सामने आ रही हैं। एक यात्री ने ट्रेन के कोच से पानी गिरने का वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया। यात्री ने कहा कि उसने रेल कर्मचारियों को इस गड़बड़ी की जानकरी दी। उन्होंने इसे अगले स्टेशन पर ठीक करने की बात भी कही, लेकिन तब तक पानी झरने के जैसे अंदर आने लगा।

ट्रेन यात्रियों की यह पहली पसंद

यात्री ने कहा कि इस पर उसने रेलवे के एक्स हैंडल रेल मदद पर ट्वीट भी किया, लेकिन वहां से किसी भी प्रकार की सहायता नहीं मिली। रास्ते भर कभी कम तो कभी ज्यादा पानी कोच में गिरता रहा। वहीं एक अन्य यात्री ने कहा कि सेमी हाई स्पीड सिर्फ नाम की ही है। गौरतलब है कि वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को बदलते भारत की बदलती तस्वीर माना जाता है। ये ट्रेन यात्रियों की यह पहली पसंद बन चुकी है, लेकिन ट्रेन में कभी पथराव तो कभी ऐसी असुविधाओं की तस्वीर सामने आती है।

स्टॉप डायरिया अभियान का विधायक ने फीता काट कर किया शुभारंभ

आर्यावर्त संवाददाता

उतरौला (बलरामपुर)। डायरिया रोको अभियान का शुभारंभ मंगलवार को विधायक राम प्रताप वर्मा ने सीएचसी पर फीता काट कर किया। सीएचसी अधीक्षक डॉक्टर चंद्र प्रकाश ने बच्चों में हो रहे डायरिया के प्रकार, लक्षण एवं इससे बचाव के बारे में विस्तार से बताया। बताया कि गर्मी व बरसात के मौसम में डायरिया की बीमारी बच्चों को परेशान करती है। इस बीमारी पर प्रभावी लगाम लगाने के लिए स्वास्थ्य विभाग डायरिया रोको अभियान चला रहा है। यह अभियान आगामी 31 जुलाई तक चलेगा जिसके तहत शून्य से पांच साल तक के बच्चों को डायरिया से सुरक्षित बनाने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। शून्य से पांच साल तक के बच्चों को डायरिया की स्थिति में ओआरएस और जिंक की उपयोगिता के बारे में बताया। कहा कि बच्चे को दिन में तीन या तीन से अधिक बार दस्त हो तो समझना चाहिए कि बच्चा डायरिया से ग्रसित है और ऐसे में उसको तत्काल ओआरएस का घोल देना चाहिए ताकि शरीर में पानी की कमी न होने पाए। इस दौरान डाक्टर योगेन्द्र कुमार, अशुतोष उपाध्याय, नगर भाजपा अध्यक्ष फणींद्र कुमार समेत एएनएम, आशा व चिकित्सा कर्मी उपस्थित रहे।

गाना सुनने से रोका तो कर दी मां की हत्या, 90 किलो की लाश बेड में कैसे डाली? लिव इन में रहती थी महिला ; उठे कई सवाल

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। कानपुर के रावतपुर में 12वीं क्लास में पढ़ने वाले बच्चे ने गाना सुनने से रोकने पर अपनी मां की हत्या कर दी। इसके बाद उसने शव को बेड में डाल दिया। छोटे बेटे के घर लौटने पर मामले का खुलासा हुआ और पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। महिला के बड़े बेटे ने पहले दुपट्टे से गला घोंट कर हत्या कर दी और फिर शव को बेड के अंदर डाल दिया। घटना की जानकारी तब हुई, जब मृतक महिला का छोटा बेटा स्कूल से लौटा और मां को ढूंढने लगा। उसने अपने बड़े भाई से पूछा तो उसने कोई जवाब नहीं दिया। काफी देर ढूंढने के बाद जब छोटे बेटे ने बेड का एक हिस्सा थोड़ा सा उठा हुआ देखा तो उसने बेड खोला। उसमें उसकी मां का शव पड़ा हुआ था। शव देख आस-पास के लोग जुट गए। दावा किया गया कि महिला की सांसें चल रही हैं। आनन-फानन में पुलिस

ने अस्पताल भेजा, लेकिन डॉक्टर ने उसको मृत घोषित कर दिया। अभी तक कि जांच में गुस्से में मां की हत्या की बात सामने आई है।

कानपुर के रावतपुर क्षेत्र में उर्मिला राजपूत एक आदमी के साथ लिव इन में रहती थी। उसके दोनों बच्चे भी साथ में रहते थे। जानकारी के अनुसार उर्मिला के पहले पति से एक बेटा है, जो 12वीं क्लास में पढ़ता है। दूसरा बेटा 10वीं क्लास में पढ़ता है। पुलिस की पूछताछ में अभी तक जो जानकारी सामने निकल कर आई है उसके अनुसार दोनों बेटों के बीच घर के काम बांटे गए थे। मंगलवार को छोटा बेटा स्कूल चला गया जबकि बड़ा बेटा घर में था। मां ने बड़े बेटे से बर्तन धोने को बोला और खुद बीपी की दवा लेकर सोने चली गई।

क्यों की मां की हत्या?

एसीपी रंजीत कुमार ने बताया कि बेटा तेज आवाज में गाना सुन रहा था। उर्मिला का बीपी बढ़ा हुआ था तो उसने बेटे से गाना बंद करने को कहा। बेटा नहीं माना तो उर्मिला ने स्पीकर तोड़ दिया। इस बात से बड़ा बेटा गुस्से में आ गया और उसने मां को धक्का दे दिया। धक्के की वजह से मां जमीन पर गिर गई और उसकी नाक टूट गई। इससे बड़ा बेटा घबरा गया कि कहीं मां सबको बता ना दे तो उसने दुपट्टे से मां का गला घोंटकर हत्या कर दी और शव को छुपाने के उद्देश्य से बेड के अंदर पैक कर दिया। दोपहर जब छोटा बेटा स्कूल से वापस आया तो उसने मां को ढूंढा और बेड के पास दुपट्टा फंसा देखा। बेड खोलने पर मां का शव अंदर मिला। छोटे बेटे को लगा कि मां की सांस चल रही है तो उसने तुरंत अपने मामा और पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने उर्मिला को अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टर्स ने उसको मृत घोषित कर दिया।

एसीपी रंजीत कुमार के अनुसार अभी तक की पूछताछ में गुस्से में मां की हत्या करने की बात बड़े बेटे ने कबूल की है। जो आरोप मृतका कि बहन ने लगाए हैं उस पर भी जांच होगी। इस मामले में अभी भी कुछ सवाल हैं, जिनके जवाब नहीं मिल सके हैं।

उर्मिला का वजन तकरीबन 90 किलो था। क्या एक 12वीं के छात्र के लिए यह संभव है कि इतने भारी शरीर को बेड के अंदर पैक कर पाए? उर्मिला की बहनों ने उर्मिला के साथ रहने वाले आदमी पर भी हत्या का आरोप लगाया है? पुलिस का मानना है कि मृतका की बहन अपने भांजे को बचाने के लिए ऐसा कह रही है।

जल निगम द्वारा पाइप लाइन के लिए खोदे गए गड्ढे में फंसी रोडबेज बस

आर्यावर्त संवाददाता

उतरौला (बलरामपुर)। नगर में जल निगम की लापरवाही का खामियाजा वाहन चालकों को भुगतना पड़ा। सोमवार को गौसिया स्कूल के सामने सरकारी बस पानी की पाइपलाइन के लिए खोदे गए गड्ढे में बुरी तरह से फंस गई।

यह घटना उस समय हुई जब गोंडा जा रही सरकारी बस (यूपी 78 केटी 6887) उतरौला बस स्टॉप से निकलकर श्यामा प्रसाद मुखर्जी चौराहे की ओर जा रही थी कि गौशिया स्कूल के सामने बस जल निगम द्वारा पाइप लाइन बिछाने के लिए खोदे गए गड्ढे में फंस गई बस फंसते ही यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई।

स्थानीय सभासद विकास गुप्ता के अनुसार, जल निगम कंपनी ने कुछ दिन पहले पानी की पाइपलाइन के कनेक्शन के लिए यह गड्ढा खोदा था। उन्होंने बताया कि इस समस्या की शिकायत कई बार जल निगम के अधिकारियों से की गई थी। लेकिन बारिश के कारण गड्ढों को नहीं भरा जा सका। नगर के सड़कों पर मौजूद ऐसे खुले गड्ढे स्थानीय लोगों और यात्रियों के लिए खतरा बने हुए हैं। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

'मेरी सौतन ने ही मुझे...', मिल गई सुहागरात पर पति को 35 टुकड़ों की धमकी देने वाली बीवी, बताया ऐसा सच

आर्यावर्त संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में एक बीवी सुहागरात के बाद ही भाग गई थी। पति ने तब खुलासा किया था कि पत्नी का एक बॉयफ्रेंड था। सुहागरात पर पत्नी ने उसे धमकी दी थी- अगर मुझे छुआ तो 35 टुकड़े कर दूंगी तुम्हारे। मैं किसी और की अमानत हूं। फिर पत्नी रातोरात ससुराल से भाग गई। अब वही दुल्हन सामने आई है। उसने ऐसा बयान दिया जिससे पूरी कहानी ही पलट गई। बताया कि वो घर से बॉयफ्रेंड के साथ नहीं भागी। बल्कि, अपने मायके चली गई थी। क्योंकि पति की पहले से ही एक बीवी और बेटी है।

एक न्यूज पेपर को दुल्हन सितारा ने बताया- मेरे पति कप्तान निषाद ने जो भी आरोप मुझपर लगाए हैं, वो गलत हैं। मैं 30 अप्रैल को विदा होकर अपनी ससुराल पहुंची। रात को कप्तान मुझे कमरे में ले गया।

वो शराब के नशे में चूर था। तब उसने मुझे अपने पहले अफेयर के बारे में बताया। फिर एक लड़की की फोटो दिखाकर कहा कि ये मेरी बीवी है और हमारी 7 साल की एक बेटी भी है। मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूंगा।

दुल्हन के मुताबिक- जब मैंने कहा कि मेरी भी एक लड़के से बात होती थी। तब उसने मुझे पीटा, पूरी रात कमरे में एक कोने में बैठाए रखा। मुझे प्यासा रखा, बाथरूम का पानी पीने को मजबूर किया। मैं जब तंग आ गई तो तीन दिन बाद ससुराल से भागकर झूंसी में मौसी के घर चली गई। वहां मैं 12 दिन तक छिपी रही। नहीं जानती थी कि पति उल्टा मुझे ही बदनाम करेगा।

शादी से पहले था अफेयर

सितारा ने आगे कहा- शादी से पहले मेरा अफेयर जरूर था, लेकिन अब उस लड़के से बात नहीं होती। अब कप्तान ने मुझे बदनाम कर ही दिया है, तो उसके खिलाफ केस करूंगी। और कप्तान जो कह रहा है कि मैं हाथ में चाकू लेकर बैठी थी तो वो सरासर झूठ कह रहा है। उसने मेरे साथ संबंध बनाए थे उस दिन। बाद में अपनी लव स्टोरी सुनाने लगा। जब मैंने अपनी सच्चाई बताई तो मुझे पीटने लगा।

सौतन ने दी थी धमकी

दुल्हन बोली- कप्तान ने सिर्फ फोटो ही नहीं, एक लड़की से मेरी फोन पर बात भी करवाई थी। तब उस लड़की ने कहा था कि अगर मेरे हसबैंड को टच भी किया तो मैं तुम्हें मार डालूंगी। अब यही इल्जाम कप्तान उल्टा मेरे ऊपर लगा रहा है। मैं अब उसके खिलाफ FIR जरूर करवाऊंगी।

दुर्गम क्षेत्रों में ड्रोन से दवा और स्वास्थ्य रिपोर्ट पहुंचाने की राह अब होगी सुगम, IIT BHU ने किया कमाल

आर्यावर्त संवाददाता

वाराणसी। ड्रोन सिर्फ फोटोग्राफी, युद्ध और कृषि कार्यों में ही नहीं बल्कि आपदा पीड़ित मानवता की सेवा के लिए भी कार्य करेंगे। नैतिक क्षेत्रों में भूमिका निभाने वाले ये ड्रोन किसी बाढ़ग्रस्त, भूस्खलित क्षेत्र में सुरंग में फंसे लोगों का न सिर्फ पता लगा सकेंगे बल्कि उनके स्वास्थ्य की जांच कर उसकी रिपोर्ट भी नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र तक भेज सकेंगे। उसके आधार पर चिकित्सक द्वारा दी गई दवा की आपूर्ति भी करने की जिम्मेदारी उठाएंगे।

भविष्य के इन नैतिक ड्रोंस पर आइआइटी बीएचयू के विज्ञानी काम कर रहे हैं। उनकी इस शोध परियोजना को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की नैतिकता पर थाईलैंड में आयोजित यूनेस्को ग्लोबल फोरम में प्रस्तुति के लिए चुना गया है। शोध परियोजना पर कार्य कर रहीं एमटेक

की छात्रा श्रुति तुलसीदास अव्हाड़ इसके लिए थाइलैंड पहुंच चुकी हैं, उन्होंने इसे मंगलवार को फोरम में प्रस्तुत भी किया।

एआइ इंटीग्रेटेड ड्युअल डिग्री प्रोग्राम (बीटेक, एमटेक इन कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग) की छात्रा श्रुति तुलसीदास अव्हाड़ व पीएचडी छात्रा शिल्पी कमारी इन ड्रोन पर आइआइटी बीएचयू के कंप्यूटर विज्ञान इंजीनियरिंग विभाग के सहायक प्रोफेसर डा. अजय प्रताप की देखरेख में काम कर रही हैं।

इस संबंध में डा. अजय प्रताप ने बताया कि इस शोध परियोजना पर काम करने के लिए केंद्र सरकार की पहल इंडिया एआइ स्टूडेंट फेलोशिप प्रोग्राम से अनुदान प्राप्त हुआ है। इस परियोजना के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के लिए एक बुद्धिमान यूएवी प्रणाली के एक वैचारिक माडल पर काम किया जा रहा है। यह ड्रोन आपदाग्रस्त दुर्गम क्षेत्रों में जाएगा, इसमें सेंसर लगे होंगे, जिनसे वह वहां मानव उपस्थिति का पता लगा सकेगा और उनकी संख्या भी गिन सकेगा।

ड्रोन उस क्षेत्र में कलाई में बांधे जाने योग्य कुछ फीते नीचे गिराएगा, जिन्हें वहां फंसे लोग अपनी कलाई पर बांध लेंगे तो वह उन सबकी अलग-अलग बीपी, ईसीजी, पल्स रेट, ब्रेन स्ट्रेस, शरीर का तापमान, श्वसन गति आदि की माप कर आंकड़ों को फाग कैपेनिंग के माध्यम से ट्रेन सिस्टम जैसे क्लाउड आदि के माध्यम से निकटवर्ती अस्पताल को भेज देगा।

वहां अस्पताल में लगे सर्वर के माध्यम से डिवाइस पर आंकड़े दिखने लगेंगे। इन्हें देख चिकित्सक प्रत्येक फंसे व्यक्ति के अनुसार दवाओं की सलाह दे सकेंगे और उन दवाओं को पुनः ड्रोन के माध्यम से संबंधित व्यक्ति तक पहुंचाया जा सकेगा।

डा. अजय प्रताप ने बताया कि इस ड्रोन के तैयार हो जाने के बाद दुर्गम ग्रामीण या पहाड़ी क्षेत्रों में अत्यंत वृद्ध, कमजोर, बीमार व्यक्ति को भी मेडिकल सुविधा मुहैया कराई जा सकेगी और उन्हें बार-बार अस्पताल ले जाने-ले आने की प्रक्रिया से राहत मिल सकेगी। यह ड्रोन भारत सरकार के रिमोट हेल्थ मानीटरिंग कार्यक्रम में अत्यंत सहायक सिद्ध होंगे। इनका प्रोटोटाइप तैयार कर लिया गया है और पेटेंट के लिए आवेदन कर दिया गया है।

क्या होती है DASH डाइट, बीपी कंट्रोल में है बेस्ट

तनाव, गलत खानपान की वजह से आज कल बीपी की समस्या आम हो गई है। इसके लिए कई लोग दवाईयों पर निर्भर हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि सिर्फ अपने खाने में कुछ बदलाव करके भी आप अपनी बीपी को कंट्रोल कर सकते हैं। जी हां, आज हम आपको एक ऐसी डाइट के बारे में बताने जा रहे हैं जिसे फॉलो करे आप बीपी को नियंत्रण कर सकते है?

DASH

डाइट कोई नया ट्रेंड नहीं, बल्कि यह दशकों से डॉक्टरों और हार्ट एक्सपर्ट्स की पहली पसंद रही है। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन और अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी जैसी संस्थाएं भी इस डाइट को हाई ब्लड प्रेशर कंट्रोल के लिए सबसे सुरक्षित और असरदार मान चुकी हैं। खास बात यह है कि यह डाइट केवल बीपी ही नहीं, बल्कि दिल की बीमारियों, स्ट्रोक, टाइप 2 डायबिटीज, किडनी फेलियर और यहां तक कि मेमोरी लॉस जैसे खतरे को भी कम करती है।

तनाव, प्रोसेस्ड फूड्स और बढ़ता नमक का सेवन... ये सभी आदतें आज हाई ब्लड प्रेशर यानी हाइपरटेंशन को आम बना रही हैं। लेकिन अगर आप DASH लेते हैं तो ये आपकी इस समस्या को कम करने में मदद करेगी। इस डाइट की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें किसी एक चीज को पूरी तरह बंद नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें बैलेंस किया जाता है। तो चलिए जानते हैं कि इस डाइट में क्या और कितना खाना चाहिए और इसे कैसे शुरू करें ?

क्या है DASH डाइट?

DASH डाइट को अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन और अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी जैसे संस्थानों ने सबसे असरदार माना है। इसमें ऐसी चीजें शामिल होती हैं, जो शरीर में नमक (सोडियम), सैचुरेटेड फैट और शुगर की मात्रा को कंट्रोल रखती हैं।

डाइट में क्या-क्या खाना चाहिए?

1- साबुत अनाज (6 से 8 बार रोज)- आपकी थाली में रोजाना 6 से 8 बार साबुत अनाज शामिल होना चाहिए। इसमें गेहूं की ब्रेड, ब्राउन राइस, ओट्स या दलिया जैसे ऑप्शन आते हैं। ये अनाज फाइबर से भरपूर होते हैं और लंबे समय तक पेट भरा रखते हैं।

2- फल और सब्जियां (4 से 5 बार) – हर दिन अलग-अलग रंगों के ताजे फल और हरी पत्तेदार सब्जियां खानी चाहिए। ये शरीर को जरूरी विटामिन और मिनरल्स देते हैं और बीपी कंट्रोल में मदद करते हैं।

3- लो-फैट दूध और दही (2 से 3 बार)- दूध और दही से कैल्शियम मिलता है, जो हड्डियों और दिल के लिए फायदेमंद होता है। लेकिन ध्यान रखें कि ये लो-फैट या टोंड हो, ताकि फैट की मात्रा ज्यादा न हो।

4- हेल्दी फैट (2 से 3 बार)- तेल पूरी तरह न हटाएं, लेकिन इसकी क्वांटिटी कम कर दें। जैसे हर दिन करीब 2 से 3 चम्मच हेल्दी तेल जैसे सरसों, मूंगफली या जैतून का तेल इस्तेमाल करें।

5- नट्स और बीज (हफ्ते में 4 से 5 बार)- बादाम, अखरोट, अलसी, सूरजमुखी के बीज जैसे ऑप्शन हफ्ते में कुछ दिन जरूर लें। ये गुड फैट्स और ओमेगा-3 से भरपूर होते हैं।

6- मीठा बहुत कम (हफ्ते में 5 बार से कम)- चीनी, मिठाई, केक, पेस्ट्री या शरबत जैसी चीज़ें हफ्ते में 4-5 बार से ज्यादा न खाएं। ये बीपी और मोटापे को बढ़ा सकते हैं।

क्या कहती है रिचर्स?

रिसर्च के मुताबिक, 24 से भी ज्यादा क्लीनिकल ट्रायल्स में यह साबित हो चुका है कि DASH डाइट ब्लड प्रेशर को कम करने में बेहद प्रभावी है। रिसर्च यह भी बताती है कि वेजिटेरियन डाइट, लो-कार्बोहाइड्रेट डाइट और मेडिटेरेनियन डाइट भी बीपी को घटाने में मदद कर सकती हैं, लेकिन इनमें से सबसे मजबूत और भरोसेमंद वैज्ञानिक सबूत DASH डाइट को लेकर ही मिले हैं। यही वजह है कि अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन और अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी ने भी अपनी गाइडलाइंस में DASH डाइट को खासतौर पर रिकमेंड किया है।

सोया चाप या पनीर टिक्का कौन है ज्यादा हेल्दी?

100 ग्राम सर्विंग	सोया चाप	पनीर टिक्का
कैलोरी	120-150	200-250
कार्ब्स	14-16 ग्राम	18 ग्राम
फैट	6-8 ग्राम	15-20 ग्राम
कैल्शियम	200-250 मिग्रा	300-400 मिग्रा

कौन है ज्यादा बेहतर ऑप्शन?

सोया चाप प्लांट-बेस्ड प्रोटीन है, जिसमें फैट कम होता है। ये खासकर वेगन और हार्ट पेशेंट्स के लिए सुटेबल है। हालांकि अगर इसमें क्रीम, मेयो या मसालेदार ग्रेवी डाली जाए तो हेल्थ पर नेगेटिव असर पड़ सकता है। वहीं, पनीर टिक्का में प्रोटीन ज्यादा होता है लेकिन फैट और कैलोरी भी काफी होती है। ये उन लोगों के लिए ठीक है जिन्हें ज्यादा एनर्जी चाहिए, लेकिन हार्ट पेशेंट्स को सावधानी बरतनी चाहिए। अगर आप लो फैट, वेगन और हेल्दी हार्ट ऑप्शन चाहते हैं तो सोया चाप बेहतर है। अगर आपको ज्यादा प्रोटीन की जरूरत है तो पनीर टिक्का भी ठीक है। लेकिन दोनों ही स्नैक्स ग्रिल या तंदूर में बनें होने चाहिए, डीप फ्राई या मलाई में डूबे न हों।

जूते बताते हैं कि कैसा आपका व्यवहार, जानें कैसे?

अक्सर हम जूते बिना सोचे–समझे पहन लेते हैं, जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए। क्योंकि आपके जूते ही आपकी व्यक्तित्व के बारे में बताते हैं।

जानकारी के मुताबिक, अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी में हुई एक रिसर्च के अनुसार, आप किसी भी व्यक्ति के जूतों को देखकर लगभग 90% तक सही अनुमान लगा सकते हैं कि वह इंसान कैसा है। यहां हम आपको इसी बारे में जानकारी देंगें।

आपने अक्सर लोगों को ये कहते सुना होगा कि व्यक्ति का व्यवहार कैसा है, इस बात की जानकारी सामने वाले के कपड़ों से ली जा सकती है। पर, क्या आप जानते हैं कि व्यक्ति का व्यवहार कैसा है, इस बात का पता जूतों के जरिए भी लगाया जा सकता है। जी हां, सुनने में ये आपको अजीब लगे लेकिन ये हकीकत है।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि पैरों में धारण करने वाले जूते, चप्पल, सैंडल, व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं उसके आचरण के बारे में जानकारी देते हैं। वो किस प्रकार के जूते पहनना पसंद करता है, उससे आप पता लगा सकते हैं कि सामने वाला कैसा है। आइए आपको भी इस बारे में बताते हैं।

रिपोर्ट में हुआ खुलासा

जानकारी के मुताबिक, अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी में हुई एक रिसर्च के अनुसार, आप किसी भी व्यक्ति के जूतों को देखकर लगभग 90% तक सही अनुमान लगा सकते हैं कि वह इंसान कैसा है। यहां हम आपको इसी बारे में जानकारी देंगें।

जो लोग स्पोर्ट्स शूज या स्नीकर्स पहनना पसंद करते हैं

यदि आप ज्यादातर समय स्पोर्ट्स शूज या स्नीकर्स पहनना पसंद करते हैं तो ये बताता है कि आप उत्साही हैं। ऐसे लोग काफी एनर्जेटिक, कूल और फ्रेंडली स्वभाव के होते हैं। ऐसा माना जाता है कि ऐसे लोगों को एक्टिव रहना पसंद होता है और ये नई चीजें आजमाने से नहीं डरते।

जो लोग चप्पल पहनना पसंद करते हैं

यदि आप ज्यादातर समय चप्पल पहनना पसंद करते हैं, इससे ये पता लगता है कि आप सहजता को प्राथमिकता देते हैं। ऐसे लोग आमतौर पर सुलझे हुए और डाउन-टू-अर्थ होते हैं।

जो लोग बूट्स पहनना पसंद करते हैं

जो लोग बूट्स पहनना पसंद इससे पता लगता है कि आप साहसी, मजबूत व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। ऐसे लोग हमेशा ही थोड़े रफ-एंड-टफ नेचर के होते हैं। इन्हें एडवेंचर पसंद होता है।

जो महिलाएं हील्स पहनना पसंद करती हैं

यदि आप ज्यादातर समय हील्स पहनना पसंद करती हैं तो इससे पता लगता है कि आप कॉन्फिडेंट, महत्वाकांक्षी और स्टाइल-कांशस हैं। ऐसी महिलाएं किसी भी माहौल में खुद को प्रेजेंट करना अच्छे से जानती हैं।

जो लोग फॉर्मल जूते पहनना पसंद करते हैं

यदि आप ज्यादातर समय फॉर्मल जूते पहनना पसंद करते हैं तो आमतौर पर आप अनुशासित, प्रोफेशनल और डिटेल्स पर ध्यान देने वाले लगेंगे। ऐसे लोग काफी नियमित होते हैं। इन्हें समय पर चीजें करना पसंद होता है। ऐसे लोग महत्वाकांक्षी भी काफी ज्यादा होते हैं।

इन 5 तरीकों से करें पुदीने को स्टोर, लंबे समय तक नहीं होगा खराब

गर्मियों के मौसम में पुदीना न सिर्फ खाने का स्वाद बढ़ाता है बल्कि यह शरीर को ठंडक भी पहुंचाता है. कई बार लोग हफ्ते भर के लिए पुदीना खरीद लाते हैं, लेकिन दो-तीन दिन में ही उसकी पत्तियां काली पड़ने लगती हैं और इस्तेमाल के लायक नहीं रह जातीं। कई बार तो दो दिन में ही इसकी पत्तियां काली पड़ने लगती हैं और उसका इस्तेमाल करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में बार-बार बाजार जाना या खराब पुदीने को फेंकना दोनों ही झंझट वाला काम है।

अगर आप चाहते हैं कि पुदीना लंबे समय तक ताजा बना रहे और हर बार चटनी या ड्रिंक के लिए नया पुदीना न लाना पड़े, तो आपको इसे सही तरीके से स्टोर करना आना चाहिए। तो चलिए आज इस आर्टिकल में बताते हैं आपको पुदीना को स्टोर करने के 5 आसान लेकिन असरदार तरीके, जिनसे आप इसे हफ्तों तक फ्रेश रख सकते हैं।

पेपर टॉवल में लपेटकर फ्रिज में रखें

अगर आप पुदीने को कुछ दिनों के लिए ताजा रखना चाहते हैं, तो इसे अच्छी तरह धोकर सुखा लें और फिर एक पेपर टॉवल या सूती कपड़े में लपेटकर एक एयरटाइट डिब्बे में रख दें। ऐसा करने से पुदीने में मॉइस्चर के कॉन्टेक्ट में कम आएगा, जिससे पत्तियां जल्दी खराब नहीं होतीं। 5-7 दिन तक पुदीना फ्रेश रह सकता है।

पानी में डंठल सहित रखें

पुदीने को फूलों की तरह एक गिलास या कटोरी में पानी डालकर उसमें डंठल सहित रखें। ऊपर से एक पॉलीथिन या जिप बैग से ढंक दें और फ्रिज में रख दें। इस तरीके से रखने से पुदीने की जड़ें सूखती नहीं हैं और ये 8-10 दिनों तक हरा और ताजा बना रहता है।

पुदीने की चटनी बनाकर फ्रीज करें

अगर आपके पास ज्यादा पुदीना है, तो उसे पीसकर चटनी बना लें और आइस क्यूब ट्रे में डालकर फ्रीजर में जमा दें, जब भी जरूरत हो, एक या दो क्यूब निकालकर इस्तेमाल करें। ये चटनी 1 से 2 महीने तक भी खराब नहीं होती और खाने में इस्तेमाल करने पर बिल्कुल फ्रेश जैसी लगती है।

सुखाकर एयरटाइट डिब्बे में रखें

पुदीने की पत्तियों को छांव में या माइक्रोवेव में सुखा लें। फिर इन्हें क्रश करके एयरटाइट डिब्बे में रख दें। इसे आप ड्राई मिंट पाउडर के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। यह तरीका पूरे साल के लिए फायदेमंद होता है और इसमें पुदीने का स्वाद और खुशबू बरकरार रहती है।

ऑलिव ऑयल के साथ फ्रीज करें

पुदीने की पत्तियों को थोड़ा काटकर आइस क्यूब ट्रे में डालें और उसमें ऑलिव ऑयल भरकर जमा दें। यह तरीका खासतौर से पिज़्ज़ा, पास्ता या ग्रेवी डिशेज़ में काम आता है। इससे पुदीने का स्वाद और खुशबू लंबे समय तक बनी रहती है और आप जब चाहें, आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं।

'भारत 2027 तक पांच ट्रिलियन डॉलर क्लब में होगा शामिल', पीयूष गोयल बोले- पीछे मुड़ने का सवाल नहीं

कोलकाता। भारत अपनी आर्थिक प्रगति की रफ्तार पर सवार होकर दुनिया के बड़े देशों की कतार में मजबूती से कदम बढ़ा रहा है। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने भरोसा जताया है कि देश 2027 तक पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य हासिल कर लेगा। उन्होंने कहा कि वैश्विक अस्थिरता और चुनौतियों के बावजूद भारत अपनी दिशा से डिगने वाला नहीं है।

कोलकाता में मर्चेंट्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एमसीसीआई) द्वारा आयोजित वर्चुअल सत्र में बोलते हुए गोयल ने कहा कि बीते एक दशक में भारत की आर्थिक नीतियों में केवल छोटे-मोटे बदलाव नहीं हुए, बल्कि इनमें 'क्रांतिकारी बदलाव' आए हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत न सिर्फ वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहा है, बल्कि आर्थिक मोर्चे पर इतिहास भी रच रहा है।

तीन वर्षों में पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था

गोयल ने कहा कि आने वाले तीन वर्षों में भारत पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की राह पर पूरी मजबूती से अग्रसर है। यह लक्ष्य 'विकसित भारत 2047' के सफर की पहली बड़ी उपलब्धि होगी। उन्होंने यह भी जोड़ा कि बड़ी अर्थव्यवस्थाएं मुश्किल हालात में ही खड़ी होती हैं, शांत पानी में कोई नाव पार नहीं लगती। यही भारत का समय है, जब हमें एकजुट होकर देश को उसकी सही जगह दिलानी है।

विदेशी मुद्रा भंडार पर बोले गोयल

मंत्री ने भारत की विकास नीति को 'समावेशी, टिकाऊ और ईमानदार' करार देते हुए कहा कि सरकार सेवा, सुशासन और नवाचार को प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने बताया कि देश का विदेशी मुद्रा भंडार 698 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। साथ ही, बैंकिंग सेक्टर मजबूत हुआ है और महंगाई पर ऐतिहासिक नियंत्रण देखा गया है। उन्होंने इसे पिछले 11 वर्षों की दूरदर्शी नीतियों का परिणाम बताया।

भारत का बेहतरीन वक्त चल रहा- गोयल

अपने संबोधन में पीयूष गोयल ने यह भी कहा कि भारत ने कभी 'फ्रैजाइल फाइव' (कमजोर अर्थव्यवस्थाओं) में गिना जाता था, लेकिन अब वह दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। उन्होंने फ्री ट्रेड एग्रीमेंट्स (एफटीए) का जिक्र करते हुए कहा कि भारत, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ जैसे विकसित देशों के साथ जो व्यापार समझौते कर रहा है, वह भारतीय उद्योग, स्टार्टअप्स और एमएसएमई के लिए बेहतरीन अवसर लेकर आएंगे।

कैसे आगे बढ़ेगा भारत, गोयल ने समझाया

तकनीक के क्षेत्र में भारत की ताकत पर जोर देते हुए गोयल ने कहा कि देश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग और 3डी प्रिंटिंग जैसे उभरते क्षेत्रों में भी अग्रणी बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने युवाओं से डरने के बजाय नए अवसरों को अपनाने की अपील की। गोयल ने कहा कि यह विकास का चक्र है, जिसमें पैमाना बढ़ने से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और यही निर्यात और समृद्धि को गति देता है। भारत की विकास गाथा हम सबकी साझी जिम्मेदारी है।

3 महीने बढ़ गई यूनिफाइड पेंशन स्कीम की डेडलाइन, अब तक कितने सरकारी कर्मचारियों ने किया चुनाव

केंद्र सरकार ने गारंटी वाली पेंशन स्कीम का चुनाव करने की डेडलाइन बढ़ाकर 30 सितंबर, 2025 कर दी है। इससे पहले तक इसकी डेडलाइन 30 जून रखी गई थी। वित्त मंत्रालय ने बताया कि कई हितधारकों ने इसकी डेडला।

नई दिल्ली, एजेंसी। वित्त मंत्रालय ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम (UPS) और नेशन पेंशन स्कीम (NPS) में से किसी एक का चुनाव करने की डेडलाइन 3 महीने और बढ़ा दी है। पहले इसका चुनाव करने की डेडलाइन 30 जून थी, जो अब बढ़ाकर 30 सितंबर कर दी गई है। केंद्र सरकार ने यह डेडलाइन तमाम स्टेकहोल्डर्स की ओर से की गई डिमांड के बाद बढ़ाई है।

वित्त मंत्रालय की ओर से जारी नोटिफिकेशन में कहा गया है कि केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों को एनपीएस और यूपीएस में से किसी एक का चुनाव करने के लिए 3 महीने का समय और दिया है। ऐसे कर्मचारी जो अभी एनपीएस में अपना योगदान दे रहे हैं, अगर वे चाहें तो 30 सितंबर तक अपना फंड यूपीएस में ट्रांसफर कर सकते हैं। इसके बाद कर्मचारियों को अपना विकल्प बदलने का अवसर नहीं दिया जाएगा और वे हमेशा एनपीएस में ही बने रहेंगे। सरकार ने 1 अप्रैल, 2025 से यूपीएस योजना को लागू किया है।

चुनाव नहीं करेंगे तो क्या होगा

यूपीएस के साथ जारी सुझावों में कहा गया कि केंद्रीय कर्मचारियों ने 30 सितंबर से पहले यूपीएस का चुनाव करना जरूरी है। इसमें बताया गया कि अगर कोई कर्मचारी इसमें फेल हो जाता है तो वह एनपीएस में ही बना रह जाएगा। इसका मतलब है कि अगर किसी ने यूपीएस का चुनाव नहीं किया तो उसे एनपीएस में ही माना जाएगा और रिटायरमेंट पर एनपीएस के हिसाब से ही पेंशन मिलेगी।

यूपीएस के लिए कौन से कर्मचारी योग्य

ऐसे सभी सरकारी कर्मचारी जिनकी सेवा की शुरुआत 1 अप्रैल, 2025 के बाद से शुरू हुई है, वे एनपीएस के बजाय यूपीएस का चुनाव कर सकते हैं।

ऐसे केंद्रीय कर्मचारी जो 31 मार्च, 2025 के पहले ही रिटायर हो चुके हैं, उन्हें भी एनपीएस से यूपीएस में जाने का विकल्प मिलता है।

एनपीएस से कितना अलग है यूपीएस

एनपीएस में जहां कर्मचारियों की पेंशन पूरी तरह बाजार और उनकी ओर से निवेश किए गए पैसों पर निर्भर करती है, जिसमें सरकार की ओर से कोई गारंटी नहीं होती है। यूपीएस में सरकार रिटायरमेंट के बाद कर्मचारी की बेसिक सैलरी का 50 फीसदी पेंशन देने की गारंटी देती है। एनपीएस में कर्मचारी का योगदान 10 फीसदी और सरकार का 14 फीसदी रहता है। वहीं, यूपीएस में कर्मचारी का योगदान 10 फीसदी तो सरकार का 18 फीसदी योगदान रहता है।

ईरान की मिसाइलों से ढेर हुआ इजराइल, 30 हजार से ज्यादा मकान तबाह, सामने आए असली आंकड़े

तेहरान। इजराइल पर ईरानी हमलों का असर अब कागज़ों पर उतरने लगा है। दरअसल ईरान और इजराइल के बीच 13 जून से शुरू हुई लड़ाई ने इजराइल में भारी तबाही मचाई है। अब इजरायली मीडिया के हवाले से जो आंकड़े सामने आए हैं, वो इस जंग के असर की असली तस्वीर बयां करते हैं।

रिपोर्ट्स के मुताबिक सिर्फ 12 दिन की जंग में इजराइल में करीब 39 हजार लोगों ने मुआवज़े के लिए आवेदन किया है, जिसमें ज्यादातर मकानों के टूटने-फूटने की शिकायतें हैं।

30 हजार से ज्यादा इमारतों को नुकसान

इजराइली टैक्स अथॉरिटी के मुआवजा विभाग को अब तक कुल 38,700 दावे मिले हैं। इनमें से 30,809 दावे मकानों के नुकसान को लेकर हैं, यानी इतने लोगों ने बताया कि उनके घर या अपार्टमेंट्स पर मिसाइलों का असर हुआ है। इसके अलावा 3,713 दावे गाड़ियों के नुकसान के लिए और 4,085 दावे मशीनरी और दूसरे सामानों को लेकर आए हैं।

इजराइली इमारतें हुईं तबाह

माना जा रहा है कि हजारों अन्य इमारकों को भी नुकसान हुआ है लेकिन अब तक उनके लिए कोई दावा दाखिल नहीं किया है। इसका मतलब है कि आने वाले दिनों में ये आंकड़ा और भी बढ़ सकता है।

सबसे ज्यादा नुकसान तेल अवीव में

स्थानीय वेबसाइट बाहादरेई हरेडिम की रिपोर्ट के मुताबिक, सबसे ज्यादा मुआवजा दावे इजराइल की राजधानी तेल अवीव से आए हैं। तेल अवीव में 24,932 से ज्यादा आवेदन मिले हैं। इसके बाद जहां सबसे ज्यादा तबाही हुई है वो इजराइल का दक्षिणी शहर अश्कलोन, जहां से 10,793 दावे किए गए हैं।

इजराइल की राजधानी तेल अवीव में हुआ सबसे ज्यादा नुकसान।

अब सवाल है कि मुआवजा कितना होगा? इसको लेकर फिलहाल कोई अंदाज़ा नहीं क्योंकि इजराइली सरकार ने इस नुकसान की कुल लागत को लेकर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। लेकिन जिस तरह से दावों की संख्या बढ़ रही है, उससे साफ है कि जंग का आर्थिक बोझ भी इजराइल पर भारी पड़ने वाला है।

जंग अब थमी, पर ज़ख्म बाकी हैं

13 जून से शुरू हुई ये जंग तब और गहरी हो गई, जब इजराइल ने ईरान के मिलिट्री और न्यूक्लियर ठिकानों पर हमला किया। इजराइल ने दावा किया था कि ईरान न्यूक्लियर बम बनाने के करीब है, जिसे तेहरान ने खारिज किया। जवाब में ईरान ने मिसाइलों और ड्रोन्स से हमला किया और अमेरिका भी जंग में कूद पड़ा। रविवार को अमेरिका ने ईरान के तीन न्यूक्लियर ठिकानों पर बमबारी की। 12 दिन की लड़ाई के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सीजफायर का ऐलान कर दिया। हालांकि जंग थम गई है, मगर तबाही के निशान अभी बाकी हैं।

ईरान के मामले में 'शुतुरमुर्ग' बन गया था तालिबान, अमेरिका ने अब उसे भी दिया झटका

तेहरान। ईरान पर इजराइल और अमेरिकी हमले के दौरान तालिबान प्रशासित अफगानिस्तान शुतुरमुर्ग बना रहा। मुस्लिम और पड़ोसी देश होने के बावजूद काबुल ने तेहरान की कोई मदद नहीं की। उलटे तेहरान की तरफ से जो मदद तालिबान से मांगी गई, उसका उसने खुलासा कर दिया। कहा जा रहा है कि यह सब अफगानिस्तान ने अमेरिका को खुश करने के लिए किया था। वहीं ईरान-इजराइल में जंग खत्म होते ही अमेरिका ने तालिबान को झटका दे दिया है। अमेरिकी कांग्रेस में एक प्रस्ताव पास हुआ है, उसके मुताबिक अफगानिस्तान को जो फंड अमेरिका के तरफ से दिया जा रहा है। उस पर अब रोक लग जाएगी। न्यूजवीक ने अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी (USAID) के हवाले से एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। इसमें कहा गया है कि अगस्त 2021 से जनवरी 2024 के बीच अमेरिका ने तालिबान प्रशासित अफगानिस्तान को 2 बिलियन डॉलर (1719 करोड़ रुपए) दिए। ये पैसे तालिबान को इन्फ्रास्ट्रक्चर और मानवीय सहायता कार्यों के लिए प्रदान किए गए। अमेरिकी विदेश विभाग के मुताबिक अफगानिस्तान के तालिबान प्रशासित बैंकों को भी पैसा भेजा गया। अमेरिका का कहना है कि उसके तरफ से अफगानिस्तान के बैंकों लगभग 40 मिलियन डॉलर की साप्ताहिक नकदी भेजी जा रही है। अब इस पैसे पर रोक लगा दी जाएगी। अमेरिका का फंड रोकना तालिबान के लिए एक झटका है। तालिबान महंगाई और शरणार्थियों की वापसी संकट से जूझ रहा है। तालिबान की सत्ता आने के बाद घोषित तौर पर उसे किसी देश ने मान्यता नहीं दी है।

12 दिन तमाशा देखते रहे पुतिन-जिनपिंग, क्या बस कहने को ईरान के पुराने दोस्त हैं रूस और चीन?

बीजिंग। दो हफ्ते पहले यानी 13 जून को जब इजराइल ने ईरान पर हमला किया था, तब चीनी सरकार ने इसकी निंदा की थी. चीन ईरान का पुराना दोस्त है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर बात की थी और सीजफायर की अपील की। चीनी विदेश मंत्री ने ईरान में अपने समकक्ष से बात की। लेकिन चीन यहीं रुक गया। हमेशा की तरह बयानबाजी की गई। तनाव कम करने और बातचीत का ढिंढोरा पीटा गया।

चीन ने ईरान को कोई भौतिक सहायता नहीं दी। बीजिंग ईरान को सैन्य सहायता देने से बचा। संघर्ष में सीधे तौर पर शामिल होने की तो बात ही छोड़िए। चाइना रिसर्च सेंटर के निदेशक जूड ब्लैंचेट ने कहा, बीजिंग के पास कूटनीतिक और जोखिम

उठाने की क्षमता दोनों का अभाव है, जिससे वो इस तेजी से बदलते और अस्थिर हालात में तुरंत हस्तक्षेप कर सके और यह सोच सके कि वो सफलतापूर्वक इससे निपट सकता है।

उन्होंने कहा कि मध्य पूर्व की पेचीदा राजनीति को देखते हुए बीजिंग बहुत ज्यादा दखल देने का इच्छुक नहीं है। वो भी तब जब वहां पर उसका आर्थिक और ऊर्जा दांव है। हालांकि यहां पर उसका सैन्य प्रभाव न्यूनतम है। चीनी सरकार संतुलित, जोखिम से दूर रहना पसंद करती है। चीन वाणिज्यिक हितों को तौलता है।

'अस्थिरता चीन के पक्ष में नहीं'

पूर्वी चीन में नानजिंग विश्वविद्यालय में डीन झू फेंग ने कहा, मध्य पूर्व में अस्थिरता चीन के हित में नहीं है। झू ने कहा, चीन के दृष्टिकोण से इजराइल-ईरान तनाव चीन के व्यापारिक हितों और आर्थिक सुरक्षा को चुनौती देते हैं और प्रभावित करते हैं। यह कुछ ऐसा है जिसे चीन बिल्कुल नहीं देखना चाहता। मंगलवार को युद्धविराम की घोषणा के बाद, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, चीन अब ईरान से तेल खरीदना जारी रख सकता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि युद्धविराम से ईरानी तेल उत्पादन में व्यवधान को रोका जा सकेगा।

अमेरिकी एनर्जी इंफोर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन की 2024 की रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि ईरान द्वारा निर्यात किए जाने वाले तेल का लगभग 80 से 90 प्रतिशत हिस्सा चीन को जाता है। ईरान द्वारा प्रदान किए जाने वाले लगभग 1.2 मिलियन बैरल तेल के बिना चीनी अर्थव्यवस्था अपने औद्योगिक उत्पादन को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर सकती है।

वाशिंगटन स्थित थिंक टैंक फाउंडेशन फॉर डिफेंस ऑफ डेमोक्रेसीज के फेलो क्रेग सिंगलटन ने कहा, कोई ड्रोन या मिसाइल के पुर्जे नहीं, कोई आपातकालीन ऋण सुविधा नहीं। सिर्फ तेहरान को शांत करने के लिए लिखे गए शब्द। रियाद को परेशान किए बिना या अमेरिकी प्रतिबंधों को आमंत्रित किए बिना।

जंग के लिए तैयार नहीं चीन

चीन की खाड़ी में मौजूदगी वाणिज्यिक है। वो युद्ध के लिए तैयार नहीं है। जब मिसाइलें उड़ती हैं तो ईरान के साथ उसकी बहुचर्चित रणनीतिक साझेदारी बयानों तक सीमित हो जाती है। बीजिंग रियायती ईरानी तेल और शांति-मध्यस्थ की सुर्खियां चाहता है। बयानों में, चीन ईरान का पक्ष लेता है और मध्यस्थता करने का वचन देता है। उसने 2023 में ईरान और सऊदी अरब के बीच एक कूटनीतिक मेल-मिलाप की मध्यस्थता की। वो ईरान के पक्ष में खड़ा रहा और बातचीत का आग्रह किया। संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य चीन ने रूस और पाकिस्तान के साथ मिलकर ईरान में परमाणु स्थलों और सुविधाओं पर हमलों की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए एक मसौदा प्रस्ताव पेश किया । उसने तत्काल और बिना शर्त युद्धविराम का आह्वान किया। भले ही परिषद के एक अन्य स्थायी सदस्य अमेरिका द्वारा प्रस्ताव पर वीटो लगाना लगभग तय है।

हमले के बाद चीनी विदेश मंत्री एक्टिव

इजराइल द्वारा ईरान पर हमला करने के तुरंत बाद चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने अपने ईरानी समकक्ष से फोन पर बात की और उन्हें बताया कि चीन स्पष्ट रूप से इजराइल द्वारा ईरान की संप्रभुता, सुरक्षा और क्षेत्रीय अखंडता के उल्लंघन की निंदा करता है। वांग ने सामान्य कूटनीतिक भाषा का प्रयोग करते हुए कहा कि चीन तनाव को कम करने में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए ईरान और अन्य संबंधित पक्षों के साथ संवाद बनाए रखने के लिए तैयार है। वांग ने बाद में इजिप्ट और ओमान के विदेश मंत्री से भी बात की। दोनों मिडिल ईस्ट के अहम देश हैं।

तनाव के दौरान शी जिनपिंग ने पुतिन से भी बात की। दोनों ने ईरान के मामले में संपर्क बनाए रखने और तनाव कम करने की दिशा में काम करने पर सहमति जताई, लेकिन चीन किसी भी प्रत्यक्ष भागीदारी से दूर रहा। रूस ने भी संघर्ष पर मौन प्रतिक्रिया दी।

ईरान शी जिनपिंग की महत्वाकांक्षी वैश्विक परियोजना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। वो 2023 में शंघाई सहयोग संगठन में शामिल हो गया, जो अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो का मुकाबला करने के लिए रूस और चीन का एक सुरक्षा समूह है। ईरान ने चीन के साथ संयुक्त अभ्यास किए हैं, जिसमें इस साल ओमान की खाड़ी में 'समुद्री सुरक्षा बेल्ट 2025' भी शामिल है। अभ्यास में रूस ने भी हिस्सा लिया था।

जीत से गदगद केजरीवाल ने राहुल-खरगे पर साधा निशाना

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने लुधियाना और विसावदर उपचुनाव में जीत के लिए पार्टी को बधाई और जनता को धन्यवाद दिया। लुधियाना से जहां संजीव अरोड़ा ने जीत दर्ज की तो विसावदर में गोपाल इटालिया ने बाजी मारी। केजरीवाल ने कहा कि एक समय कहा जाता था कि राजनीति अच्छे लोगों के नहीं है, लेकिन आम आदमी पार्टी ने इस धारणा को तोड़ा।

आप ने लुधियाना पश्चिम सीट पर कब्जा बरकरार रखा। संजीव अरोड़ा ने इस सीट से कांग्रेस उम्मीदवार भारत भूषण आशु के खिलाफ 10,637 मतों के अंतर से जीत दर्ज की। गुजरात की विसावदर सीट पर हुए उपचुनाव में गोपाल इटालिया पहले नंबर पर रहे। बीजेपी दूसरे और कांग्रेस स्थान पर रही।

केजरीवाल ने क्या कहा?

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा, मैं दोनों को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। मुझे बेहद खुशी है। एक समय में कहा जाता था कि राजनीति अच्छे लोगों के लिए नहीं है, लेकिन आप ने धारणा तोड़ी है। जनता ने इन दोनों की मेहनत को समर्थन दिया। जनता चाहती है कि अच्छी छवि वाले लोग राजनीति में आएं। उन्होंने कहा कि पंजाब में हम पिछली बार से ज्यादा वोटों से जीते हैं। जिस तरह से पंजाब में आप की सरकार काम कर रही है मुझे लगता है कि अगले चुनाव में आप 100 सीटों का आंकड़ा पार कर लेगी।

कांग्रेस पर साधा निशाना

केजरीवाल ने आगे कहा कि गुजरात में भी हम पहले से ज्यादा वोटों से जीते हैं। गुजरात की ये जीत 2027 में होने वाले चुनाव की ओर इशारा है। आज आप गुजरात के लोगों की एक उम्मीद है। गुजरात के लोग आप में एक उम्मीद देखते हैं। कांग्रेस कभी गुजरात के लोगों की उम्मीद नहीं थी। कांग्रेस की टॉप लीडरशिप बीजेपी की गोद में बैठी हुई है।

उन्होंने कहा कि जनता कांग्रेस को समझ चुकी है। कांग्रेस और बीजेपी दोनों पार्टी मिलकर चुनाव लड़ रही हैं। हमारी लड़ाई पार्टियों से नहीं, सिस्टम से है। मैं जनता को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। ये दोनों जीत सेमीफाइनल है, जो बताती है कि आने वाले गुजरात के चुनाव में आप सरकार बनाएगी और पंजाब में हम 100 से ज्यादा सीट लाएंगे।

पीएफआई की हिट लिस्ट में 972 लोग, पूर्व जज का नाम भी शामिल ; NIA ने कोर्ट में पेश किए दस्तावेज

बंगलूरू, एजेंसी। केरल में प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) की खतरनाक साजिशों का खुलासा हुआ है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने कोर्ट में बताया कि पीएफआई के पास करीब 972 लोगों की हिट लिस्ट थी, जिनमें अन्य समुदायों के प्रभावशाली लोग, एक पूर्व जिला जज और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े लोग शामिल थे। एनआईए द्वारा कोर्ट में पेश दस्तावेजों के अनुसार, पीएफआई ने अपने गुप्त 'रिपोर्टर्स विंग' के जरिए इन लोगों की निजी जानकारी एकत्र की थी। इसमें नाम, उम्र, फोटो, पद और रोजमर्रा की गतिविधियों तक का विवरण रखा गया। यह जानकारी जिला स्तर पर इकट्ठा कर संगठन के राज्य स्तर के नेताओं तक पहुंचाई जाती थी। एजेंसी ने बताया कि पीएफआई की तीन मुख्य शाखाएं थीं. 'रिपोर्टर्स विंग', 'फिजिकल और आर्म्स ट्रेनिंग विंग' और 'सर्विस विंग/हिट टीम्स'। रिपोर्टर्स विंग एक तरह से संगठन की खुफिया शाखा थी, जो खासतौर पर हिंदू समुदाय के नेताओं की जानकारी जुटाती थी।

भारतीय वायुसेना की बढ़ेगी ताकत! नई मिसाइल की तैयारी में जुटा DRDO, कम होगी लागत, निशाना भी अचूक

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय सेना के तीनों संगठन बढ़ती वैश्विक चुनौतियों के बीच अपने आप को लगातार अपग्रेड करने में लगे हैं। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन यानी DRDO की इसमें खास भूमिका है। DRDO अब एक नई एयर लॉन्च सबसोनिक क्रूज मिसाइल पर तेजी से काम कर रहा है। सूत्रों के मुताबिक यह मिसाइल न सिर्फ हवा से दागी जा सकेगी बल्कि दुश्मन के इलाके जैसे कि कमांड सेंटर, एयरबेस या लॉजिस्टिक हब को 600 किलोमीटर दूर तक निशाना बनाने में सक्षम होगी। DRDO की ओर से तैयार की जा रही मिसाइल अपने आप में खास है। यह मिसाइल DRDO की पहले से बनी ITCM मिसाइल पर आधारित होगी, लेकिन इसे जमीन की जगह लड़ाकू विमानों से दागा जाएगा। इस एयर लॉन्च सबसोनिक क्रूज मिसाइल को इस तरह डिजाइन किया जा रहा है कि इसे Su-30MKI, राफेल, मिग-29, तेजस और आने वाले AMCA जैसे विमानों से आसानी से लॉन्च किया जा सके। यह काफी किफायती भी होगा। जमीन से लॉन्च होने वाली मिसाइलों के लिए बूस्टर लगाना पड़ता है, लेकिन इस एयर लॉन्च वर्जन में इसकी जरूरत नहीं होगी क्योंकि विमान से मिसाइल को पहले से ही ऊंचाई और रफ्तार मिल जाएगी। इस खास मिसाइल में भारत में तैयार किए गए माणिक टर्बोफैन इंजन लगाया जाएगा, जिसे खासतौर पर इस काम के लिए अपग्रेड किया जा रहा है। मिसाइल में इनर्शियल नेविगेशन और सैटेलाइट गाइडेंस सिस्टम भी लगे होंगे, जिससे यह बहुत सटीकता से लक्ष्य भेदने में सक्षम होगी। साथ ही इसका डिजाइन ऐसा होगा कि यह दुश्मन के रडार और एयर डिफेंस सिस्टम से बचते हुए बेहद नीचे उड़कर अपने टॉरगेट तक पहुंच सके। इस सबसोनिक क्रूज मिसाइल के बारे में कहा जा रहा है कि यह ब्रह्मोस-NG जैसी मिसाइलों की तुलना से हल्की और सस्ती होगी।

पालघर के स्कूल को दी गयी बम से उड़ाने की धमकी! प्रशासन से तुरंत पूरा स्कूल खाली कराया

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के पालघर जिले के एक निजी स्कूल को बुधवार सुबह ईमेल के जरिए बम की धमकी मिली, जिसके बाद छात्रों, शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों को स्कूल परिसर से बाहर निकाला गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। मीरा-भायंदर वसई-विरार (एमबीवीवी) पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि बम की धमकी अफवाह निकली क्योंकि नालासोपारा स्थित स्कूल के परिसर में जांच के दौरान कुछ भी संदिग्ध नहीं

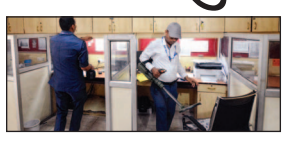

मिला। नालासोपारा मुंबई का एक सुदूरवर्ती उपनगर है।

उन्होंने बताया कि निजी स्कूल को एक ईमेल मिला था जिसमें बताया गया था कि स्कूल परिसर में बम रखा है। उन्होंने बताया कि सूचना मिलने के बाद पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और छात्रों, शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों को बाहर निकाला। अधिकारी के अनुसार, बम निरोधक एवं निपटान दस्ते (बीडीडीएस) के कर्मियों ने स्कूल परिसर की गहन तलाशी ली, लेकिन उन्हें कोई विस्फोटक उपकरण नहीं मिला जिसके बाद उन्होंने इस धमकी को अफवाह घोषित कर दिया। इससे एक महीने पहले महाराष्ट्र के पालघर में कलेक्टर कार्यालय को मंगलवार तड़के बम की धमकी वाला ईमेल मिला, जिसके बाद पुलिस को परिसर खाली कराना पड़ा।एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने देर रात बताया कि यह धमकी झूठी निकली। उन्होंने बताया कि कलेक्टर कार्यालय के आधिकारिक आईडी पर सुबह करीब 6.23 बजे एक ईमेल भेजा गया, जिसमें कहा गया था कि परिसर में आरडीएक्स रखा गया है और यह दोपहर 3.30 बजे फट जाएगा। जिला पुलिस अधीक्षक बालासाहेब पाटिल अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मौके पर पहुंचे और तलाशी शुरू की।

तमन्ना भाटिया से ब्रेकअप के बाद क्या इस एक्ट्रेस को डेट कर रहे विजय? वीडियो ने बढ़ाया उत्साह

सोशल मीडिया पर विजय वर्मा का एक वीडियो वायरल हो रहा है। इसके आधार पर फैंस कयास लगा रहे हैं। आइए जानते हैं पूरा मामला।

हाल ही में एक्टर विजय वर्मा का तमन्ना भाटिया से कथित तौर पर ब्रेकअप हुआ। ऐसा लगता है कि अब विजय वर्मा को दोबारा प्यार मिल गया है। सोशल मीडिया पर इन दिनों एक ऐसी वीडियो वायरल हो रही है, जिसके आधार पर यह दावा किया जा रहा है कि विजय वर्मा दोबारा रिश्ते में हैं।

वायरल वीडियो में क्या है?

खबरें हैं कि विजय वर्मा 'दंगल' गर्ल फातिमा सना शेख को डेट कर रहे हैं। हाल ही में पैपराजी ने एक कैफे के बाहर एक वीडियो शूट की है। इस वीडियो में देखा जा सकता है कि विजय वर्मा और फातिमा सना शेख हंस रहे हैं और एक दूसरे से गले मिल रहे हैं। इसके बाद दोनों पैपराजी को पोज दे रहे हैं।

विजय और फातिमा के फैंस हैं उत्साहित

विजय वर्मा और फातिमा सना शेख की वीडियो वायरल होने के बाद कई यूजर्स हैरान हैं और कयास लगा रहे हैं कि दोनों रोमांटिक रिश्ते में हैं। हालांकि अब तक न तो विजय वर्मा ने और न ही फातिमा सना शेख ने अपने रिश्ते के बारे में कोई बात कही है। बहरहाल दोनों के फैंस उनके वायरल वीडियो को लेकर बहुत उत्साहित हैं।

तमन्ना और विजय का इसी साल हुआ ब्रेकअप

आपको बता दें कि विजय वर्मा पहले तमन्ना भाटिया के साथ रिश्ते में थे। दोनों ने साल 2023 में सीरीज 'लस्ट स्टोरीज' में एक साथ काम किया था। काई महीनों तक एक दूसरे को डेट करने के बाद तमन्ना भाटिया ने फिल्म कंपेनियन को दिए इंटरव्यू में विजय के साथ रिश्ते में होने की बात कबूली थी। हालांकि इस साल मार्च में कथित तौर पर दोनों अलग हो गए।

एक साथ काम कर रहे हैं तमन्ना और विजय

यह गौरतलब है कि विजय वर्मा और फातिमा सना शेख अपकमिंग फिल्म 'गुस्ताख इश्क' में एक साथ काम कर रहे हैं। फिल्म का निर्देशन विभु पुरी कर रहे हैं। फिल्म में नसीरुद्दीन शाह और शारिब हाशमी हैं।

सौरव गांगुली की भूमिका निभाने में घबरा रहे राजकुमार राव, बोले– 'यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है'

पिछले कुछ वक्त से भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और दिग्गज खिलाड़ी सौरव गांगुली की बायोपिक को लेकर चर्चाएं हो रही थीं। कभी बायोपिक बनने न बनने को लेकर कन्फ्यूजन था तो कभी दादा की भूमिका में कौन होगा, इसको लेकर असमंजस की स्थिति थी। लेकिन अब फिल्म को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है और ये कंफर्म हुआ है कि सौरव गांगुली की बायोपिक बन रही है। साथ ही ये भी कंफर्म हो गया है कि राजकुमार राव इसमें दादा यानी कि सौरव गांगुली की भूमिका में नजर आएंगे।

राजकुमार राव ने किया कंफर्म

एनडीटीवी के साथ बातचीत में अभिनेता राजकुमार राव ने ये कंफर्म किया कि वो पूर्व भारतीय कप्तान की बायोपिक में मुख्य भूमिका निभाएंगे। राजकुमार राव ने कहा, 'अब जब दादा ने यह कह दिया है, तो मुझे भी इसे आधिकारिक रूप से घोषित कर देना चाहिए। हां, मैं उनकी बायोपिक कर रहा हूं और दादा की भूमिका निभा रहा हूं। मुझे दादा इस रोल के लिए काफी घबराहट भी हो रही है। क्योंकि यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, लेकिन यह बहुत मजेदार होने वाला है।'

किरदार के लिए एक्टर ने सीखी बंगाली

इस दौरान राजकुमार राव ने फिल्म के लिए बंगाली सीखने में आने वाली दिक्कतों का भी जिक्र किया। हालांकि, उनके लिए ये उतना मुश्किल नहीं रहा, क्योंकि उनकी पत्नी पत्रलेखा भी एक बंगाली हैं। इसलिए वो अपनी पत्नी से बंगाली सीखते हैं। हालांकि, रोल के लिए खुद को तैयार करना राजकुमार के लिए लिए मुश्किल रहा।

दादा ने पहले ही दी थी जानकारी

इससे पहले इस साल की शुरुआत में खुद सौरव गांगुली ने अपनी बायोपिक को लेकर बात की थी और ये बताया था कि राजकुमार राव उनकी भूमिका निभाएंगे। हालांकि, इसके बाद बीच में तारीखों की दिक्कतों के चलते कुछ अटकलें भी लगी थीं। अब राजकुमार राव ने फिल्म की पुष्टि करते हुए अपने रोल को कंफर्म किया है। इस बायोपिक में सौरव गांगुली के व्यक्तिगत जीवन से लेकर उनके करियर तक के बारे में दिखाया जाएगा।

'मालिक' में नजर आएंगे राजकुमार राव

राजकुमार राव के वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिनेता को आखिरी बार पिछले महीने रिलीज हुई कॉमेडी-ड्रामा फिल्म 'भूल चूक माफ' में देखा गया था। इस फिल्म में उनके साथ वामिका गब्बी प्रमुख भूमिका में नजर आई थीं। अब राजकुमार राव अपनी एक्शन-थ्रिलर फिल्म 'मालिक' को लेकर चर्चाओं में बने हुए हैं। यह फिल्म 11 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। फिल्म में राजकुमार राव के साथ मानुषी छिल्लर प्रमुख भूमिका में नजर आएंगी।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com